सेवा समर्पण

मूल्य ₹ 20

वर्ष-42, अंक-12, कुल पृष्ठ-36, भाद्रपद-आश्विन, विक्रम सम्वत् 2082, सितम्बर, 2025

गोपालधाम के बच्चों को स्कूल यूनिफॉर्म का वितरण

गत 7 अगस्त को डॉण उज्जवल गुलाटी जी एवं उनकी पूज्य माता जी के करकमलों द्वारा गोपालधाम छात्रावास में बच्चों को स्कूल यूनिफॉर्म का वितरण किया गया। यह कार्य न केवल उनके सामाजिक उत्तरदायित्व का प्रतीक है, बल्कि बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए एक प्रेरणास्पद कदम भी है। सेवा भारती परिवार की ओर से डॉण उज्जवल गुलाटी जी एवं उनकी माता जी को इस स्नेहपूर्ण एवं प्रेरणादायक योगदान के लिए हार्दिक धन्यवाद एवं अभिनंदन। इस अवसर पर श्री संजय जिंदल, श्री वरदान अग्रवाल, श्रीमती जयति अग्रवाल, श्री रामसेवक जी, श्री धीरेंद्र जी, श्री मनोज शर्मा आदि उपस्थित रहे।

तुली जी ने मनाया जन्मदिवस

गत 5 अगस्त को गोपालधाम छात्रावास में जनक जिला नगर संघचालक श्रीमान राजकुमार तुली जी ने अपने जन्मदिन पर बच्चों के साथ अपने परिवार और मित्रों सहित दोपहर का भोजन रखा। कार्यक्रम बहुत अच्छा रहा। सेवा भारती की ओर से विभाग अध्यक्ष श्रीमान मुकेश गोयल जी, मंत्री श्रीमान रामसेवक जी, गोपालधाम के मंत्री श्री ओम सेठी जी भी शामिल हुए।

कंझावला जिला कार्यकारिणी बैठक

गत 20 अगस्त को इंद्रप्रस्थ विद्यालय, बेगमपुर गाँव में सेवा भारती जिला कंझावला की जिला कार्यकारिणी की बैठक हुई। इसकी शुरुआत शिक्षिका बहनों के द्वारा गीत तथा गायत्री मंत्र से की गई। विभाग अध्यक्ष श्रीमान राजेंद्र जी भाई साहब ने दो सत्रों में संघ शताब्दी वर्ष के कार्यक्रम एवं महिला समन्वय संगोष्ठी का विषय लिया। विभाग से श्रीमान सुदीप जी, श्याम जी के साथ कंझावला जिला महिला समिति की अध्यक्ष श्रीमती नीता जी, जिला महिला समिति, नगरों की कार्यकारिणी, निरीक्षिका, शिक्षिका, भजन मण्डली की बहनों सहित कुल संख्या 58 की रही। बैठक के अंत में कल्याण मंत्र कराया गया तथा जलपान के साथ बैठक का समापन किया गया। ❐

चित्रकला प्रतियोगिता

झण्डेवाला विभाग, कमला नगर जिले में सेवा भारती द्वारा संचालित संस्कार केन्द्र में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इसमें बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर वीर महापुरुषों के उत्कृष्ट चित्र बनाए।

संरक्षक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

परामर्शदाता
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
डॉ. शिवाली अग्रवाल

कार्यालय

सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर कुमार

एक प्रति : 20/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 200/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-42, अंक-12, कुल पृष्ठ-36, सितम्बर, 2025

विषय-सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
संपादकीय		4
दक्षिणी विभाग में मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान		6
शक्ति में सन्तुलन चाहिए	इंदिरा मोहन	8
श्रद्धापूर्वक अर्पण है श्राद्ध	आचार्य मायाराम पतंग	9
अनंत चतुर्दशी का महत्व	श्वेत कमल	11
जन्म विदेश में, मन भारत में	डॉ. दीप्ति अग्रवाल	12
साक्षात्कार : जीवन में आपका हुनर सबसे बड़ी पूंजी है : संगीता		14
स्वास्थ्य संभाल और देखरेख : जीवन का असली धन	वीना गर्ग	15
कविता : एक संदेश	निर्मल महाजन	16
कविता : नारी की पहचान	साध्वी सुनंदा	16
ब्रह्म मुहूर्त में उठने के लाभ	हेमंत शर्मा	17
भिन्नता और बदलाव : जीवन का स्वभाव	डॉ संजय जिंदल	18
अंगदान की महिमा	आचार्य अनमोल	19
केंद्र सरकार की नीतियां और सेवाएं	कमलेश त्रिपाठी	20
हिन्दी से हिन्दी दिवस तक	सोमेश कुमार पाण्डेय	21
सेवाधाम के बच्चों का जीवन परिवर्तन	दीप्ति अग्रवाल	23
भगवान बिरसा मुंडा भवन का लोकार्पण		24
अपना भोजनालय में मात्र 10 रुपये में भोजन		25
टीन्स फॉर सेवा और किलकारी का एक साल		26
सेवा भारती की अन्य गतिविधियां		27

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

सेवा में आगे स्वयंसेवक

एक बार फिर से सेवा भारती के कार्यकर्ताओं और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने वह कार्य किया, जिसकी गूंज पूरे देश में हुई। वह कार्य है देशभर में बाढ़ पीड़ितों की सहायता करना। बता दें कि इस वर्ष पूरे देश में बहुत अच्छी वर्षा हो रही है। कहीं-कहीं तो बादल फटने और अति-वृष्टि होने के कारण जान-माल का भारी नुकसान हुआ।

तेलंगाना में पिछले दिनों भारी बारिश हुई। इस कारण हैदराबाद से लगभग 115 किलोमीटर दूर कामारेड्डी सबसे अधिक प्रभावित हुआ। रिकॉर्ड तोड़ बारिश के कारण शहर और आसपास के मंडलों के बड़े हिस्से जलमग्न हो गए। कामारेड्डी में ही 30.85 सेंटीमीटर बारिश हुई। इस मुश्किल घड़ी में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और सेवा भारती के कार्यकर्ता सबसे पहले आगे आए और बाढ़ प्रभावित परिवारों को समय पर बचाव और राहत पहुँचाई। स्वयंसेवकों ने पानी का सामना करते हुए आठ लोगों को सीधे बचाया, साथ ही जलमग्न इलाकों में फंसे 1,000 से अधिक लोगों को बचाने में एन.डी.आर.एफ. और एस.डी.आर.एफ. की टीमों को पूरा सहयोग दिया। राहत अभियान बचाव अभियान से कहीं आगे बढ़ गया। पहले ही दिन, स्वयंसेवकों ने राजमार्ग के किनारे रंगमपल्ली और बसवापुर में फंसे वाहन चालकों को भोजन वितरित किया और लगभग 700 लोगों को केले, बिस्कुट और सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराया। मोहम्मद नगर मंडल के थुनकीपल्ली गाँव में सेवा भारती के कार्यकर्ताओं ने एक विद्यालय में शरण लिए हुए परिवारों के लिए आपातकालीन दवाइयाँ, नाश्ता और भोजन का प्रबंध किया। बाढ़ ने कामारेड्डी शहर को ठप कर दिया, सड़कें, घर और सार्वजनिक बुनियादी ढांचा जलमग्न हो गया। कामारेड्डी को भिक्कनूर से जोड़ने वाला राष्ट्रीय राजमार्ग-44 (हैदराबाद से नागपुर) बाढ़ के पानी से जलमग्न हो गया।

घंटों तक वाहनों की आवाजाही ठप रही, जिससे कई यात्री फँस गए। राजमपेट मंडल में 27 अगस्त की सुबह 8:30 बजे से 28 अगस्त की सुबह 7 बजे के बीच 24 घंटे से भी कम समय में 44.05 सेमी बारिश दर्ज की गई, जो राज्य में सबसे अधिक रही। राजमपेट मंडल के नादिमी टांडा

पंजाब में बाढ़ ने 1,000 से अधिक गांवों को चपेट में लिया। बाढ़ प्रभावितों की सहायता के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक आगे आए। स्वयंसेवक समाज के सहयोग से राहत व सेवा कार्य में जुटे। स्वयंसेवकों ने कई स्थानों पर राहत एवं बचाव कार्यों के साथ-साथ सेवा कार्य भी किए।

पंजाब के बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में पानी की बोतल बांटते कार्यकर्ता

और लेथा ममीदी टांडा में लगातार बारिश ने घरों को तबाह कर दिया और लगभग 250 लोग बेघर हो गए। संघ के स्वयंसेवकों ने तुरंत भोजन के पैकेट तैयार किए और वितरित किए। बाद में प्रभावित लोगों को चावल, मक्के का आटा, दालें, नमक, मिर्च, तेल, बर्तन, कपड़े और कंबल उपलब्ध कराए। लगभग पाँच घर पूरी तरह बह गए, जबकि 35 को आंशिक नुकसान हुआ। यह सुनिश्चित करते हुए कि कोई भी परिवार भूखा न रहे, कार्यकर्ताओं ने डोमकोंडा के घरों से 500 चपातियाँ भी एकत्र कीं और उन्हें विस्थापितों में वितरित किया। कामारेड्डी कस्बे में, राहत कार्यों में बथुकम्मा कुंटा (170 लोग), अंबेडकर नगर (70), अयप्पा कॉलोनी (100), जीआर कॉलोनी (150), राजमार्ग खंड (700) और बस स्टैंड (160) शामिल थे। कुल मिलाकर, अकेले इसी कस्बे में 1,350 से अधिक लोगों को भोजन कराया गया। तीसरे दिन, लिंगमपेट मंडल के बथुकम्मा कुंटा, ड्राइवर्स कॉलोनी और कोमाटपल्ली में राहत कार्य जारी रहा, जहाँ 240 और लोगों को भोजन परोसा गया।

ऐसी ही सेवा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने उत्तरकाशी और पौड़ी गढ़वाल के बाढ़ प्रभावित सुदूर गाँवों में भी की। पौड़ी जिले के सैंजी गाँव और आसपास के आपदा प्रभावित क्षेत्रों में स्वयंसेवकों ने लोगों को दो सप्ताह की राशन किट वितरित की। धराली में बादल फटने से बड़ा नुकसान हुआ। इसके बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, उत्तरकाशी की देखरेख में स्वयंसेवकों की टीम ने हर्षिल, भटवाड़ी, गंगनानी और धराली से जुड़े ग्रामीण क्षेत्रों में जरूरतमंदों के घरों तक राशन किट पहुंचाई। कार्यकर्ताओं ने पहाड़ के सुदूर गांवों में बहुत ही कठिनाई के साथ राहत सामग्री पहुंचाई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने लोगों से उत्तराखंड में आपदा प्रभावितों की मदद के लिए आगे आने की अपील भी की। इसके लिए 'उत्तरांचल दैवीय आपदा पीड़ित सहायता समिति' का बैंक खाता नंबर जारी किया गया। यह समिति पहले भी उत्तराखंड की प्राकृतिक आपदाओं में जन सहयोग से मदद करने में अग्रणी रही है।

धराली में बादल फटने से बड़ा नुकसान हुआ। इसके बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, उत्तरकाशी की देखरेख में स्वयंसेवकों की टीम ने हर्षिल, भटवाड़ी, गंगनानी और धराली से जुड़े ग्रामीण क्षेत्रों में जरूरतमंदों के घरों तक राशन किट पहुंचाई। कार्यकर्ताओं ने पहाड़ के सुदूर गांवों में बहुत ही कठिनाई के साथ राहत सामग्री पहुंचाई।

इस वर्ष जम्मूख्रकश्मीर में भी भारी वर्षा से जम्मू, कठुआ, उधमपुर जैसे क्षेत्रों में बाढ़ की स्थिति बनी। यहां भी सेवा भारती और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं ने पीड़ितों की मदद करने में बड़ी भूमिका निभाई। 30 जुलाई को ऊधमपुर के उपायुक्त सलोनी राय ने राहत सामग्री से भरी एक वैन को रवाना किया। यह सामग्री सेवा भारती, उधमपुर को सौंपी गई। यहां के कार्यकर्ताओं ने उस सामग्री को पीड़ितों के बीच वितरित किया। वैन को रवाना करने के बाद उपायुक्त ने सेवा भारती के सहयोग की सराहना की।

पंजाब में भी बाढ़ ने 1,000 से अधिक गांवों को चपेट में लिया। बाढ़ प्रभावितों की सहायता के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक आगे आए। स्वयंसेवक समाज के सहयोग से राहत व सेवा कार्य में जुटे। स्वयंसेवकों ने कई स्थानों पर राहत एवं बचाव कार्यों के साथ-साथ सेवा कार्य भी किए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, पंजाब प्रांत संघचालक सरदार इकबाल सिंह ने बताया कि गुरदासपुर में स्वयंसेवकों ने कई ट्रालियों में सामान जैसे दूध, चीनी, घरेलू राशन, पीने का पानी व दवाइयां आदि 10 गांवों में पीड़ितों तक पहुंचाया। इस क्षेत्र में ऐसे गांवों में भी राहत सामग्री पहुंचाई गई, जहां प्रशासन भी नहीं पहुंच पाया था। यहां स्वयंसेवकों ने प्रशासन के साथ सहभाग किया। इसी तरह कपूरथला जिले में स्वयंसेवकों ने बाढ़ प्रभावित इलाकों में लोगों को घरेलू सामान, ऑडोमॉस, मोमबत्तियां-माचिस, दवाइयां, ओ०आर०एस० और अन्य सामान उपलब्ध कराया। मुकेरियां में स्वयंसेवकों ने भंगाला खण्ड के गांव हलेड, कोलिया, सिम्बली, मेहताबपुर में बाढ़ पीड़ितों की सहायता की। मेहताबपुर के आसपास कई-कई फीट पानी भर गया था। पानी उतरने के बाद इलाके की साफख्रसफाई, स्वच्छता, लोगों की सहायता करने का काम स्वयंसेवकों ने किया।

इन कार्यों से सेवा भारती के कार्यकर्ताओं और संघ के स्वयंसेवकों ने आम लोगों के बीच अपनी नई पहचान बनाई है। ❐

दक्षिणी विभाग में मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान

गत 24 अगस्त को सेवा भारती दक्षिणी विभाग ने हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 'मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह-2025' का आयोजन किया। पी.जी.डी.ए.वी. (सांध्य) महाविद्यालय के सभागार में हुए इस कार्यक्रम में दक्षिण दिल्ली स्थित विभिन्न सेवा बस्तियों, कैंपों और अभावग्रस्त बस्तियों की 10वीं और 12वीं के उन मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने वर्ष 2024-2025 के सत्र में कम से कम 65 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे। ये सभी ऐसे विद्यार्थी थे, जिन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने मनोबल को कम नहीं होने दिया और पूरी लगन व मेहनत के साथ अपनी पढ़ाई पर ध्यान दिया तथा अच्छे अंकों से परीक्षा उत्तीर्ण की। ऐसे सभी पूर्व नामांकित छात्रों को सेवा भारती द्वारा स्कूल बैग, रजिस्टर, पेन, पानी की बोतल, पदक और प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ अतिथियों द्वारा दीप-प्रज्ज्वलन दीप-मंत्र के साथ हुआ। इसके तुरंत बाद ही सरस्वती वंदना की प्रस्तुति कालकाजी जिले के नेहरू कैंप की किशोरियों के सुन्दर नृत्य के साथ किया गया। विभाग मंत्री श्री विनोद

श्रीवास्तव ने मंच और सभागार में उपस्थित सभी अतिथियों और कार्यकर्ताओं का परिचय करवाया। तत्पश्चात् सभी अतिथियों का स्वागत शॉल और प्रतीक चिन्ह भेंट करके किया गया। साथ में राष्ट्रीय आपदा विशेषांक 'सेवा साधना' और सेवा समर्पण की एक एक प्रति भी दी गई।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री कमल जी (प्रसिद्ध युवा उद्योगपति) ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए शिक्षा का महत्व और कैसे उन्होंने संघर्ष करते हुए अपने व्यापार को स्थापित किया यह बताया। उन्होंने बताया कि प्रत्येक व्यक्ति में कोई न कोई गुण होता है और व्यक्ति को वही गुण पहचान कर उसे पूरा करने का प्रयास करना चाहिए। आमंत्रित अतिथि के रूप में पी.जी.डी.ए.वी. (सांध्य) महाविद्यालय के प्रधानाचार्य प्रो0 रविन्द्र गुप्ता जी ने विद्यार्थियों को कहानियों के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में सतत प्रयास कर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। सम्मानित अतिथि सुप्रसिद्ध समाजसेवी, व्यवसायी और सेवा भारती दिल्ली प्रांत के अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल जी ने जीवन में कोई संकल्प लेकर, उस पर अडिग रह कर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहानी के माध्यम से निस्वार्थ सेवा का महत्व बताते हुए प्रतिदिन कुछ न कुछ निस्वार्थ सेवा कार्य करने तथा उसका रिकार्ड रखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने सर्वाधिक सेवा कार्य करने वाले विद्यार्थियों का वार्षिक मूल्यांकन करने तथा उन्हें पुरस्कृत करने की योजना बनाने की भी प्रेरणा दी।

सेवा भारती के संदर्भ में वक्ता के नाते प्रान्त सामाजिक आयाम प्रमुख सुश्री अंजू पाण्डे जी ने सेवा भारती के विविध आयामों की जानकारी दी और सेवा भारती से जुड़ने का आह्वान किया। कार्यक्रम में किशोरी मनस्वी द्वारा किया गया कत्थक नृत्य भी आकर्षण का केंद्र रहा। कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय सेवा भारती से श्री विकास नाम जोशी जी, प्रांत प्रतिनिधि के नाते प्रांत कार्यकारिणी सदस्य श्री इंद्रनील जी, श्री अमरनाथ जी, प्रांत कार्यालय सचिव श्री प्रकाश जी एवं दक्षिणी विभाग के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री खजान शर्मा जी और श्री चुन्नी लाल मदान जी शामिल रहे। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दक्षिणी विभाग के लाजपत जिला के जिला कार्यवाह श्री आनंद जी (आचार्य पी.जी.डी.ए.वी. सांध्य महाविद्यालय) सहित प्रतिष्ठित नागरिकों और कुछ दानदाताओं को भी विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में तीनों जिलों के सभी कार्यकर्ता उपस्थित रहे। सेवा भारती के विभागाध्यक्ष डॉ अनंग पाल जी द्वारा कार्यक्रम की अध्यक्षता की गई और कार्यक्रम के सफल आयोजन में सहयोगी रहे सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। श्रीमती स्मिता नामजोशी जी ने कार्यक्रम का बहुत ही सुन्दर मंच संचालन किया, जिसकी सभी ने प्रशंसा की। कार्यक्रम का समापन कल्याण-मंत्र के साथ हुआ। तत्पश्चात् भोजन मंत्र श्रीमती अंजली भट्टाचार्य जी के द्वारा करने के साथ भोजन प्रसाद ग्रहण कर समाप्त हुआ।

शक्ति में सन्तुलन चाहिए

■ इंदिरा मोहन

शक्ति की आराधना वर्ष में दो बार चैत्र तथा शारदीय नवरात्र में होती है। यह शक्ति कहीं शंकर पत्नी पार्वती के रूप में जानी जाती है, तो कहीं महाकाली दुर्गा के रूप में। कहीं विष्णु पत्नी लक्ष्मी के रूप में, तो कहीं विद्या की देवी सरस्वती के रूप में जन-जन में पूजित हैं। इस आद्याशक्ति को जननी कहा गया है जो सबको तुष्टि देती है और सबकी तुष्टि में स्वयं भी तुष्ट होती है। वह निर्माण भी करती है और संहार भी। यह शक्तियाँ जब निर्माण में लगती हैं तो मनुष्य में देवत्व का गुण बढ़ता है, धरती पर स्वर्ग उतर आता है, किन्तु यदि यह शक्तियाँ विनाश करती हैं तब समाज में हाहाकार मचा देती हैं। सृजन और संहार की यह शक्ति हम सबके भीतर भी विराजमान है।

इन शक्तियों का सही संतुलन ही हमारे व्यक्तित्व की सफलता का रहस्य है। जितना उचित संतुलन होगा उतना ही परिवार स्वस्थ, सुख और सम्पन्नता की ओर विकास करता जाता है। यह शक्ति 'जय' है, कल्याण है, शांति है और सुंदरता भी। यह न तो किसी का अहित चाहती है न किसी का अपकर्ष। यह तो 'सर्व मंगल मांगल्य' है, सर्वहित साधिका है। अत: 'तेरे मेरे' की संकुचित सोच बनाता मुझे ही सुख मिले की स्वार्थी सोच सही मायने में न तो जगदम्बा की पूजा है न भगवती की आराधना। अपने भीतर गहराई में छिपी 'परम शक्ति' को जाने बिना यह देह सार्थक नहीं होती। अत: शक्ति को पहचानना, समझना जीवन में उतारना हमारा पहला कर्तव्य होना चाहिए। आजकल भगवती जागरण बहुत लोकप्रिय हो गया है। पंडाल लगते हैं, रात भर जागकर शेरावाली ज्योतावाली की दुहाई दी जाती है। लम्बी-लम्बी भक्तों की कतारें मंदिरों की शोभा बढ़ाती हैं। एक ओर माँ का गुणगान, दूसरी ओर अपने घर में स्त्री का अनादर, दहेज के नाम पर मारपीट, छेड़छाड़ और न जाने क्या क्या। इतना ही नहीं जो समाज साल में दो बार बड़े गर्व से कन्या पूजन करता है, वही समाज कन्या जन्म से पूर्व ही कन्या भ्रूण की हत्या कर देता है। हम यह भूल जाते हैं कि एक बालिका की हत्या में एक माँ की हत्या भी होती है। यह कैसा विरोधाभास है? कैसा शालीन आचरण है?

कम से कम महिलाओं को इस आचरण के विरुद्ध एकजुट होना चाहिए। आप सभी से मेरा नम्र निवेदन है कि अपने-अपने परिवारों में बेटियों को विकास का अवसर दें। हमारी इस सोच में बदलाव जरूरी है जो कि महिलाओं को बराबर का दर्जा देने से रोकती है।

हमें सनातन शक्ति से जुड़ना है जहाँ मानवता है, सद्भाव है, सहनशक्ति है तथा नारी शक्ति का सम्मान है। जीवन को संयमित किए बिना आत्मशक्ति नहीं आती। अत: अपने-अपने स्तर पर हम सबको जागरूक होना है। अनाचार, अन्याय, हिंसा शक्ति का नहीं दुर्बलता का प्रतीक है। शक्ति मनमानी करने में नहीं वरन् अधर्म के विनाश और संयमित व्यवहार करने में है। याद रखिये अन्याय, अत्याचार, विचार को सत्य, शिव और सौंदर्य की ओर मोड़िए, आपके चारों ओर का वातावरण धीरे-धीरे शुद्ध और शांत होता जाएगा। आपकी जीत निश्चित है। केवल धीरज चाहिए अपने दिन का आरम्भ भगवत-स्मरण से कीजिए परिस्थितियाँ आपके अनुकूल होती जाएंगी। अपने कर्तव्य का पालन करते हुए धर्म के पथ पर चलिए। जिस प्रकार आकाश में बादल आते हैं और चले जाते हैं उसी प्रकार आपके जीवन रूपी आकाश में दु:ख के बादल आएंगे और चले जाएंगे। ❐

श्रद्धापूर्वक अर्पण है श्राद्ध

■ आचार्य मायाराम पतंग

श्रद्धापूर्वक जो कुछ अर्पित किया जाता है, वही श्राद्ध होता है। समय के साथ श्राद्ध का अर्थ रूढ़ हो गया। अब केवल आश्विन मास के एक पक्ष को ही पितृपक्ष का श्राद्ध पक्ष कहा जाता है। भाद्रपद मास की पूर्णिमा को सम्मिलित करके ये अमावस्या तक की कुल सोलह तिथियां श्राद्ध पक्ष कहलाती हैं। वर्ष भर में पिता अथवा किसी पूर्वज का देहान्त जिस तिथि को भी हुआ हो आश्विन कृष्ण पक्ष की उसी तिथि को अमुक पूर्वज का श्राद्ध किया जाता है।

श्राद्ध का महत्व

मेरे पिता जी अपने पिता जी का श्राद्ध करने के समय मुझे साथ रखते थे। मेरे हाथ से सब क्रियाएं भी सम्पन्न करवाते थे। अत: कभी-कभी मन में शंका उठती थी। क्या किसी के द्वारा खाया हुआ अन्न हमारे पूर्वजों को मिल जाता होगा? या यह सब मात्र दिखावा है। सन् 1985 जनवरी की प्रत्यक्ष घटना ने मेरी शंकाओं का समाधान कर दिया। उन्हीं दिनों महान सन्त श्री रामचन्द्र डोंगरे जी की भागवत कथा लालकिले के सामने सुभाष मैदान में चल रही थी। इधर मेरी पूजनीया माता जी गत चार मास से बीमार चल रही थीं। उनकी पीठ पर एक फोड़ा हो गया था। मधुमेह के कारण ठीक नहीं हो पा रहा था। स्मृति भ्रंश भी हो गया था। एक जनवरी से उनकी आवाज भी बंद हो गई थी। श्वांस की घड़घड़ाहट से ही उनके जीवित होने का प्रमाण मिल रहा था। उन दिनों हम लोधी कालोनी (नई दिल्ली) में रहते थे। शनिवार को श्री डोंगरे जी की कथा सुनकर मेरी बहन भी आ गई थी। अगले दिन रविवार था मेरे बड़े भाई भी सुबह ही आ गए। माताश्री की बुरी हालत को देखकर सब परेशान थे। पड़ोसी भी यही कहते थे कि इनकी हालत देखी नहीं जाती। डॉक्टरों ने तो कहा कि इस स्थिति में अस्पताल में भी केवल ऑक्सीजन दिया जा सकता है। मेरी बहन कैलाशी देवी को पूजा के समय ज्वाला देवी का प्रवेश हो जाता था। पूछने पर वे रोगों के लिए उपचार तथा समस्या का हल भी बता देती थीं। देवी से मेरे भाई साहब ने पूछा- ''माता! अब तो ऐसी कृपा करो जिससे हमारी मां इस भयानक कष्ट से छूट जाए।'' देवी ने उत्तर दिया- आप में से जो भी कोई अपने पुण्य उन्हें संकल्प कर के अर्पित कर देगा तो कष्टो से इन्हें मुक्ति मिल जाएगी।

मैं बचपन से नाम जप करता हूं। मैंने तुरन्त निश्चय किया कि अपनी मां के लिए यह कोई बड़ी बात नहीं। तब मैंने लोटे से हथेली पर जल लिया और संकल्प किया- ''मैं मायाराम पुत्र श्री रामजी समातिया गोत्र में उत्पन्न आज माघ कृष्ण नवमी तिथि को अपनी माता श्री चमेली देवी को अपने आज तक किए समस्त नाम जप का पुण्य अर्पित करता हूं। इन पुण्यों का फल मैं माता जी के कल्याण की कामना से अर्पित कर रहा हूं।'' इतना कहकर मैंने हाथ का जल पृथ्वी पर छोड़ दिया। इसके दस सेकेंड बाद ही माता जी ने अंतिम श्वास ली और उन्हें कष्टों से मुक्ति मिल गई। साथ ही मुझे यह विश्वास हो गया कि संकल्प करने से देवताओं और पितरों को भी हमारी अर्पित की गई वस्तु किसी भी रूप में अवश्य प्राप्त होती है।

महान संत एकनाथ जी की कथा पढ़ी थी। उन्होंने अपने पितरों के श्राद्ध की सामग्री तैयार कर ली तो घर के आगे से गुजरते हुए एक दलित परिवार की गर्भवती महिला भोजन की सुगंधि से बहुत प्रभावित हुई। उसने अपने पति को भोजन मांगने को विवश कर दिया। एकनाथ जी और उनकी पत्नी सहृदय थे। उन्होंने उन्हें अन्दर बुलाया और श्रद्धापूर्वक भोजन करवाया। वे तृप्त होकर चले गए। भोजन दुबारा तैयार किया गया। ब्राह्मणों को बुलावा भेजा गया। तब तक दलितों को इनके द्वारा भोजन कराने की बात गांव भर में फैल चुकी थी। ब्राह्मणों ने तय किया कि एकनाथ जी के घर कोई भोजन नहीं करेगा। दलितों को भोजन पहले करवा कर हमारा अपमान किया गया है। एकनाथ जी

के सेवक ने कहा- आप थालियों में भोजन परोसकर अपने पूर्वजों को संकल्पपूर्वक आह्वान कीजिए। ये लोग बेशक ना खाएं पितरों को सीधे भोजन मिल जाएगा। संत एकनाथ जी ने भोजन परोसा और संकल्प करके पितरों का आह्वान किया। उनके पितर मनुष्य रूप धारण करके पधारे और प्रेमपूर्वक भोजन करके वापस चले गए। तब गांव के समस्त ब्राह्मणों ने संत की महत्ता को समझा और क्षमा याचना की। उन्होंने पुन: भोजन बनवाकर ब्राह्मणों को खिलाया।

अपनी घटना से पूर्व मैं इसे मात्र कहानी मानता था परन्तु 1985 से मैं इस कथा को अक्षरश: सत्य मानता हूं। अब मुझे श्राद्ध के महत्व पर पूर्ण विश्वास है। आत्मश्लाघा के लिए नहीं अपितु प्रत्यक्ष प्रमाण के लिए घटना का उल्लेख किया है अत: क्षमा चाहता हूं।

बिहार में गया तीर्थ में किया गया श्राद्ध महत्वपूर्ण माना जाता है। उसके बाद पितर तर जाते हैं। काठियावाड़ (गुजरात) का सिद्धपुर स्थान 'मातृ गया' माना जाता है। यहां नवमी को श्राद्ध करने से माता को पूर्ण मुक्ति मिल जाती है। हरियाणा में कुरुक्षेत्र से 25 किमी. दूर श्री सरस्वती पुण्य सरोवर में दुर्घटनाग्रस्त व्यक्तियों का श्राद्ध कल्याणकारी माना जाता है। यहां पूरे वर्ष श्राद्ध कर्म चलते रहते हैं। प्रत्येक अमावस्या को भीड़ रहती है।

श्राद्ध तर्पण विधि

तीर्थ स्थानों पर तो तर्पण कराने वाले विप्र (पण्डे) यथा विधि तर्पण कराते ही हैं। घर पर भी यदि विद्वान पंडित से तर्पण करवाएं तो अच्छा रहता है। घर पर ब्राह्मण के अभाव में आप स्वयं भी श्राद्ध कैसे मनाएं इसकी सरल संक्षिप्त विधि निम्नलिखित है-

प्रथम तो जिस पूर्वज की मृत्यु की जो भी तिथि हो उनका श्राद्ध उसी तिथि को (आश्विन कृष्ण पक्ष में) किया जाना चाहिए। जिनकी देहावसान की तिथि याद न हो उन सबका श्राद्ध अमावस्या को ही किया जाता है। श्राद्ध में स्वेच्छा से पकवान बनाए जाते हैं। फिर भी श्राद्ध में तिल (काले) सर्वोत्तम वस्तु है। श्राद्ध मध्याह्न के समय होना चाहिए बहुत जल्दी सुबह नहीं। प्राय: दो तीन जगह निमंत्रण पाकर ब्राह्मण समय बांटते हुए प्रात: 8 बजे, 10 बजे, 1 बजे कई जगह समय तय कर लेते हैं। केवल दोपहर में ही श्राद्ध किया जाना उचित है। यदि ब्राह्मण ना भी मिले तो धेवता (पुत्री का पुत्र) को श्राद्ध में अवश्य बुलाना चाहिए। इस दिन क्रोध तो कतई नहीं करना चाहिए तथा भ्रष्ट आचरण वाले ब्राह्मण को कदापि ना बुलवाएं।

भोजन तैयार होने पर एक थाली में पांच जगह परोसें हाथ में जल लेकर अक्षत् (साबुत चावल) तथा पुष्प लेकर संकल्प करें। संकल्प संस्कृत में होना अनिवार्य नहीं शुद्ध भावना से हिन्दी या अपनी मातृभाषा में बोला जा सकता है-

"मैं अमुक नाम सुपुत्र अमुक नाम अमुक गोत्र में उत्पन्न अपने पूज्य पिता श्री अमुक जी को वार्षिक श्राद्ध तर्पण करने के लिए समस्त दोष निवारण हेतु तथा परिवार पर कृपा एवं आशीर्वाद हेतु भोजन ग्रहण करने के लिए श्रद्धापूर्वक आमंत्रित करता हूं। इसके लिए पंचबलि का संकल्प करता हूं।" यह कहकर जल पृथ्वी पर छोड़ दें।

पंचबलि थाली में पांच जगह परोसे गए अन्न को क्रमश: पांच पत्तों पर रखें तथा अलग-अलग इस प्रकार दें-

1. गो बलि - (पत्ते पर रखकर बोलें) इदं गोम्यो: इदं न मम अर्थात् यह ग्रास गउओं के लिए है, मेरा नहीं है।
2. श्वानबलि - (पत्ते पर) इदं श्वानेभ्य: इदं न मम अर्थात् यह ग्रास श्वानों के लिए है, मेरा नहीं।
3. देवादि बलि - (पत्ते पर) इदं अन्नं देवेभ्य: इदं न मम अर्थात् यह भोजन देवताओं के लिए है मेरा नहीं।
4. पिपीलिवादि बलि - (पत्ते पर) इदं अन्नं पिपीलिकादिभ्यो इदं न मम अर्थात् यह अन्न चींटी कीट पतंग आदि के लिए है।
5. काकबलि (पृथ्वी पर रखें) - इदं अन्नं वायसेभ्य: इदं न मम अर्थात् यह पृथ्वी पर रखा अन्न कौओं के लिए है मेरा नहीं।

यह बलि का अन्न पहले भिजवा दें। लोटे से सूर्य को जल दान करें तत्पश्चात् ब्राह्मण को भोजन कराने का संकल्प बोलें। यहां भी आप अपनी बात अपनी भाषा में कह सकते हैं। भाव ऐसा होना चाहिए- "अमुक नाम सुपुत्र श्री अमुक नाम अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक स्थान का निवासी अमुक संवत् अमुक मास की अमुक तिथि को अपने पूज्य को श्रद्धापूर्वक आह्वान करके उनके स्थान पर आपको श्रद्धापूर्वक भोजन के लिए प्रार्थना करता हूं। आप भोजन ग्रहण करने की कृपा करें।"

इसके बाद ब्राह्मणों को भोजन और दक्षिणा देकर विदा करें और सभी बंधु-बांधव तथा इष्ट-मित्रों सहित परिवार के लोग भी भोजन ग्रहण करें। ❐

अनंत चतुर्दशी का महत्व

■ श्वेत कमल

अनंत चतुर्दशी भारतीय जनमानस की संस्कृतनिष्ठ सांस्कृतिक समरसता का प्रतीक महापर्व है, जो भाद्रपद महीने के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि को मनाया जाता है। भगवान विष्णु को समर्पित एक हिंदू त्योहार है, जिसे अनंत चौदस भी कहा जाता है। इस दिन भगवान विष्णु के अनंत रूप की विशेष पूजा-अर्चना की जाती है, और भक्त भगवान विष्णु को समर्पित एक विशेष पूजा अनुष्ठान करते हैं। खीर का भोग लगाते हुए, खीर मंथन के द्वारा अनंत देव जी अर्थात विष्णु भगवान विशेष कृपा प्राप्ति की कामना करते हैं और 14 गांठों वाला एक धागा बांधते हैं, जिसे अनंत सूत्र कहते हैं, जो भगवान विष्णु के अनंत (दिव्य सर्प) रूप का प्रतीक है।

साथ ही देश के अनेक भागों में यह त्योहार गणेश चतुर्थी के दस दिवसीय उत्सव का समापन दिवस भी होता है, जब भक्त भगवान गणेश की मूर्तियों को जलाशयों में विसर्जित करते हैं।

अनंत चतुर्दशी का महत्व: इस दिन, भक्त भगवान विष्णु के अनंताकार रूप की आराधना की जाती है, जो समस्त विघ्न बाधाओं से मुक्ति और समस्त सांसारिक समृद्धि को प्रदान करने वाले एकमात्र परब्रह्म है।

अनंत सूत्र: भक्त 14 गांठों वाला पावन अनंत सूत्र (धागा) बांधते हैं, जो भगवान विष्णु के अनंत (दिव्य सर्प) रूप का प्रतीक है। विशेष पूजा के उपरांत स्त्री-पुरुष अपनी बांह पर 14 गांठों वाला यह पवित्र धागा कम से कम 14 दिन और अधिकतम एक वर्ष के लिए धारण करते हैं। यह परम कल्याणकारी सूचक माना जाता है।

सतयुग में कौंडिन्य ऋषि की कथा : अनंत चतुर्दशी व्रत से जुड़ी एक प्रसिद्ध कथा है, जिसके अनुसार ऋषि कौंडिन्य ने अपनी पत्नी द्वारा बांधे गए अनंत सूत्र को तोड़ दिया था, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें अनेकानेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। बाद में, उन्होंने भगवान विष्णु से क्षमा मांगी और इस अनुपम व्रत का पालन करके अपना खोया हुआ वैभव वापस प्राप्त किया।

पांडवों की कथा : एक अन्य कथा के अनुसार, पांडवों ने भी वनवास के दौरान सपत्नीक इस व्रत का पालन किया था और भगवान विष्णु की परम अनुकम्पा से उन्हें अपना छीना हुआ राज्य वापस मिला था।

गणेशोत्सव का समापन : भारत के कुछ राज्यों जैसे महाराष्ट्र और उसके आसपास के क्षेत्रों में भी अनंत चतुर्दशी, गणेश चतुर्थी के दस दिवसीय उत्सव का समापन के रूप में बड़े हर्षोल्लास के साथ भावभीनी पुष्पांजलि देते हुए मनाया जाता है। जब भक्त भगवान गणेश की मूर्तियों को विसर्जित करते हुए 'गणपति बप्पा मोरया, मंगल मूर्ति मोरया' का जयकारा लगाते हैं।

अनंत चतुर्दशी कैसे मनाई जाती है?

व्रत और पूजा : भक्त भगवान विष्णु के अनंत रूप की आराधना करते हैं और अनंत सूत्र बांधते हैं। 14 गांठों वाला धागा। अनंत सूत्र कपास या रेशम का बना होता है और इसे कुमकुम से रंगा जाता है।

भोजन : इस दिन, भक्त विशेष रूप से बनाए गए 14 रोटियां (रोट) को भगवान को अर्पित करते हैं और फिर ब्राह्मणों को दान करते हैं। प्रसाद के रूप में नए चावल से बने मीठे प्रसाद को भगवान विष्णु को समर्पित किया जाता है। भोजन में मुख्य रूप से सात्विक भोजन या फलाहार का ही सेवन किया जाता है।

गणेशोत्सव का समापन : महाराष्ट्र और आस-पास के क्षेत्रों में, अनंत चतुर्दशी को गणेश विसर्जन के रूप में मनाया जाता है, जब भक्त भगवान गणेश की मूर्तियों का दस दिवसीय पूजा-पाठ के बाद श्रद्धापूर्वक विसर्जित करते हैं।

भारत जैसे सांस्कृतिक विविधता वाले देश में अनंत चतुर्दशी चाहे भगवान विष्णु की आराधना करते हुए मनाया जाए या गणेश पूजा के विसर्जन के रूप में दोनों ही दृष्टि से इसका सांस्कृतिक और धार्मिक दोनों ही रूपों में अत्यधिक महत्व है। ❐

जन्म विदेश में, मन भारत में

■ डॉ. दीप्ति अग्रवाल

भवानी दयाल संन्यासी का नाम दक्षिण अफ्रीका में बसे प्रवासी भारतीयों के लिए अनजाना नहीं है। हाँ, भारतवासियों को उनका नाम और उनके महान कार्यों के बारे में जानना बहुत जरूरी है। वे भारतीयों के अधिकारों के लिए लड़ते हुए एक तरह से सभी देशों के गिरमिटियों की आवाज बन गए थे और उन्हीं के अथक प्रयासों से मदन मोहन मालवीय और गोपाल कृष्ण गोखले प्रवासियों की तकलीफों के बाबत भारत में आवाज उठा पाए थे। दक्षिण अफ्रीका में उस समय हिन्दी ओर वैदिक शिक्षा का जो प्रचार प्रसार हुआ था, सामाजिक कुरीतियों का जो उन्मूलन हुआ था उसमें उनके योगदान के लिए, हम हिंदीभाषी, भारतवासी और प्रवासी भारतवासी अगर उन्हें भूलते हैं तो यह हमारी कृतघ्नता और अज्ञानता है। आज उनके बारे में जानना इतिहास का एक स्वणिम पन्ना पलटने जैसा है।

भवानी का जीवन परिचय

उनका जन्म जर्मिस्ट्न के गौतेंग में 10 सितम्बर, 1892 को हुआ। उनके पिता का नाम जयराम था, जो भारत से गिरमिटिया मजदूर के रूप में 1881 में दक्षिण अफ्रीका गए थे और माता का नाम मोहिनी देवी था। वे विधवा थीं और किसी अराकाटी ने उन्हें बहला-फुसला कर दक्षिण अफ्रीका जाने के लिए डिपो में भेज दिया था। पानी के जहाज की यात्रा के दौरान ही उनकी भवानी के पिता से मुलाक़ात हुई थी। भवानी का जन्म, उनके मातापिता के गिरमिट के पाँच वर्ष पूरे होने के भी कई वर्ष बाद हुआ।

उनकी प्रारम्भिक शिक्षा जोहान्सबर्ग के संत सिप्रियाँ, वेस्लन और पंडित आत्मा राम नरसी राम व्यास के स्कूल में हुई, जहाँ अंगरेजी, हिन्दी और गुजराती पढ़ाई जाती थी। 1899 में जब वह छह साल के थे एंग्लो-बोअर युद्ध छिड़ा। बेशक बोएर युद्ध हार गए। लेकिन उनकी वीरता और जज्बे से प्रभावित होकर भवानी ने देश भक्ति की भावना का संकल्प लिया।

भवानी का पिता के साथ भारत गमन:

ट्रांसवाल में अंग्रेजी राज आया जिससे प्रवासी भारतीयों पर जुल्मों का पहाड़ टूट पड़ा। उनके हाइ कमिश्नर लॉर्ड मिलनेर ने 'पीस प्रेजेर्वेशन ऑर्डिनेन्स' जारी किया जिसके अनुसार प्रत्येक भारतीय को अपने नाम की रजिस्ट्री करवाना और 'पीला परवाना' पास में रखना जरूरी हो गया। जिसके विरोध में गांधीजी को सत्याग्रह का शस्त्र उठाना पड़ा। भवानी के पिता 'ट्रांसवाल इंडियन असोसिएश्न' के सभापति थे और गांधीजी की सहमति से उन्होंने इसके खिलाफ आंदोलन चलाया, लेकिन सब व्यर्थ। उनके पिता को मुआवजे के दो हज़ार पौंड मिले। उसी पर संतोष कर वे भवानी को लेकर भारत रवाना हुए।

भारत के अनुभव:

भवानी बहुत उमंगें लेकर भारत आए थे। लेकिन यहाँ के हालात ने उन्हें बहुत ही खिन्न और क्षुब्ध किया। भारत में रहकर उन्हें किसानों की असली हालत का अंदाजा हुआ। भारत आने पर जात बिरादरी का सांप अपनी स्वार्थसिद्धि हेतु डंसने को तैयार बैठा था। उनके गाँव वालों को जब लगा कि वे टापू से बहुत पैसा कमाकर लाये हैं तो पंचायत ने बिना हर्जाना भरे उनके पिता को बिरादरी में शामिल करने से इंकार कर दिया और साथ ही ये भी कहा कि भवानी और उनके बहन भाई तो हर्जाना भरकर भी बिरादरी में शामिल नहीं हो सकते, क्योंकि उनका जन्म एक विवाहित विधवा की कोख से हुआ था।

आर्य समाज का प्रभाव:

भारत आने पर उन्हें देहात में हिन्दुओं की दुर्दशा सड़ी-गली नाना प्रकार की रूढ़ियों, कुरीतियों और दुष्कर्मों ने हिन्दू धर्म का विकृत रूप दिखाया। उनकी हिन्दू धर्म के प्रति आसक्ति विरक्ति में बदल गयी। ऐसे में एक पादरी की नजर उन पर पड़ी और वे उन्हें ईसाई धर्म अपनाने के लिए बरगलाने लगे। संयोग से उन्हीं दिनों कलकत्ता से प्रकाशित

'वीरभारत' पत्रिका में एक लेख में लिखा था कि 'सत्यार्थ प्रकाश' ने देश का सत्यानाश कर डाला। उनकी 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ने की जिज्ञासा ने उनसे पुस्तक पढ़वायी और पुस्तक पढ़ने के बाद उनके अंतर्चक्षु खुले और वे 1909 में पूर्णतया आर्य समाज के अनुयायी बन गए।

ब्रिटिश सरकार के खिलाफ विद्रोह:

उन्हीं दिनों लॉर्ड करजन ने बंग-भंग कर डाला और देश में स्वदेशी आंदोलन की लहर उठने लगी। भवानी सोचते रहते भारत का उद्धार कैसे होगा? भारत देश की दारुण दशा, गुलामी और दरिद्रता देखकर भवानी का रुझान क्रांतिकारियों की ओर बढ़ने लगा। वे दादा भाई नौरोजी, लाला लाजपत राय, अजित सिंह, बाल गंगा धर तिलक, अरबिंदो घोष, गोपाल कृष्ण गोखले के विचारों से प्रभावित हुए और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा का प्रसार, अंग्रेजों से भारत को आज़ाद करवाना आदि उद्देश्यों को लेकर गावों में आंदोलन किए। वे गिरमिटियों के नरकतुल्य जीवन के प्रति बहुत संवेदनशील थे। उन्होंने गिरमिटियों के जीवन के संदर्भ में लिखा,

"वास्तव में उन भारतीयों की करूण कथा इतनी विस्तृत हृदय विदारक और मर्मस्पर्शी है कि यदि पृथ्वी को पत्र और समुद्र को स्याही बनाकर लिखने बैठें तो भी उसे यथावत अंकित कर सकना असंभव है।"

उनका संन्यास ग्रहण:

जब भवानी केवल तीस वर्ष के थे तब उनकी पत्नी जगरानी देवी का निधन हो गया था। पुनर्विवाह की चर्चा से छुट्टी पा जाने की तमन्ना से उन्होंने सन 1927 में चैत की रामनवमी को संन्यास ग्रहण कर लिया। उनका संन्यास निवृत्तिमूलक ना होकर प्रवृतिमूलक था।

भवानी की हिन्दी सेवा:

भवानी दयाल का हिन्दी के प्रति प्रेम और उनकी हिन्दी के प्रति सेवा प्रशंसनीय है। जब बचपन में वे दक्षिण अफ्रीका से भारत आए तब उनका थोड़ा बहुत हिन्दी का ज्ञान भारत में उनके अध्ययन में सहायक बना। तुलसीकृत रामायण का किषिकंधा कांड और सुंदरकांड उन्हें कंठस्थ हो गए। सूरदास के पद भी उन्हें बहुत भाने लगे, क्योंकि भारतीय परिवारों में अंग्रेजी घुसपैठ बना चुकी थी और भारतीय हिन्दी भूलते जा रहे थे। भवानी ने सोचा अगर यही हालत रही तो एक दिन हिन्दी की हस्ती ही मिट जाएगी। दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी ने 'इंडियन ओपिनियन' नामक जो अंग्रेजी पत्र प्रकाशित किया उसके हिन्दी संस्करण का सम्पादन भवानी दयाल ने किया। हिन्दी पठन पाठन के लिए उन्होंने रात्रि पाठशाला और फुटबाल क्लब की स्थापना की स्कूली बच्चों के लिए उनकी लिखी हुई 'हिन्दी-पहली पुस्तक' में वर्णमाला उच्चारण और बारहखड़ी के साथ-साथ कुछ सरल पाठ भी थे। भवानी दयाल ने कसम खाई कि वे हिन्दी आश्रम की स्थापना करके ही दम लेंगे। हिन्दी साहित्य को उन्होंने अपने लेखन से बहुत समृद्ध बनाया। 'दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास' पुस्तक उन्होंने बापू के दक्षिण अफ्रीका से भारत चले जाने के बाद लिखी थी और यह 1916 में इंदौर से छपी थी। तब तक भारत में सत्याग्रह आरंभ भी नहीं हुआ था। उस समय भारत और हिन्दी जगत के लिए सत्याग्रह का सिद्धान्त और उसका क्रियात्मक प्रयोग बिल्कुल नया था। अतः यह पुस्तक पूरे भारत में बहुत प्रसिद्ध हो गई। काशी नागरी प्रचारिणी सभा के संस्थापक राम नारायण मिश्र ने उनकी प्रशंसा करते हुए कहा कि हिन्दी में इतना बड़ा पब्लिसिटी मास्टर कोई नहीं हुआ। 9 मई, 1950 को अस्वस्थता के चलते उनका निधन हो गया।

दक्षिण अफ्रीका में दिसम्बर 1992 को उनका जन्म शताब्दी वर्ष मनाया गया और उनकी याद में दक्षिण अफ्रीका में एक मुख्य मार्ग का नामकरण दयाल रोड रखा हुआ है। उनकी स्मृति में फीजी नसीनु में भवानी दयाल आर्य कॉलेज पहले ही से है।

दक्षिण अफ्रीका में दिसम्बर 1992 को उनका जन्म शताब्दी वर्ष मनाया गया और उनकी याद में दक्षिण अफ्रीका में एक मुख्य मार्ग का नामकरण दयाल रोड रखा हुआ है। उनकी स्मृति में फीजी नसीनु में भवानी दयाल आर्य कॉलेज पहले ही से है। दक्षिण अफ्रीका और भारत के लिए उनके महान कार्यों को देखते हुए इसमे कोई शक नहीं कि दक्षिण अफ्रीका के साथ-साथ भारत के वासी भी भारत और दक्षिण अफ्रीका की औपनिवेशिक सत्ता के विरोधी के रूप में और हिन्दी के अद्भुत सेवक के रूप में उन्हें सदैव याद रखेंगे। ❐

जीवन में आपका हुनर सबसे बड़ी पूंजी है : संगीता

संगीता जी का जीवन हमें सिखाता है कि हिम्मत और मेहनत से कोई भी कठिनाई जीती जा सकती है। घर की जिम्मेदारी और मम्मी की बीमारी के कारण उन्हें बारहवीं के बाद पढ़ाई छोड़नी पड़ी, लेकिन उन्होंने सीखने की चाह नहीं छोड़ी। सेवा भारती से जुड़कर सिलाई, मेहंदी जैसे हुनर सीखे और सेवितजन से कार्यकर्ता बनने का सफर तय किया। आज वे अपने पैरों पर खड़ी हैं, खुद कमाती हैं और खुशी से जीवन बिता रही हैं। हाल ही में उनकी माता जी का देहांत हो गया और वे दो बच्चों की मां भी बन गई हैं। इस समय काम थोड़ा कम कर दिया है, लेकिन उनका विश्वास है कि बिटिया बड़ी होते ही वे फिर से पूरी तरह काम शुरू करेंगी। आइए उन्हीं से जानते हैं उनकी प्रेरणादायक कहानी, उन्हीं की जुबानी।

प्रश्न : आपका पारिवारिक जीवन कैसा रहा?

उत्तर: पापा दर्जी का काम करते हैं। हम दो भाई और एक बहन हैं, मैं बीच की हूँ। मां अक्सर बीमार रहती थीं, तो घर की जिम्मेदारी जल्दी ही मेरे ऊपर आ गई।

प्रश्न : पढ़ाई कहाँ तक की है?

उत्तर: मैंने बारहवीं तक पढ़ाई की। आगे पढ़ना चाहती थी, लेकिन घर की जिम्मेदारी और मम्मी की तबीयत ने पढ़ाई रोक दी।

प्रश्न : दर्जी के काम में आपकी शुरुआत कैसे हुई?

उत्तर: पापा को कभी-कभी मदद करती थी। इसी से तुरपाई, हुक लगाना जैसी छोटी चीजें सीख लीं। पापा ने कहा कि अगर अच्छा लगे तो ट्रेनिंग ले लो, आगे काम आएगी।

प्रश्न : सेवा भारती तक कैसे पहुँची?

उत्तर: मेरी चाची जी का घर सेवा भारती केंद्र के पास है। उन्होंने केंद्र के बारे में बताया। मैंने दाखिला लिया। श्रीमती उर्मिल जी, जो शिक्षिका हैं, से सिलाई सीखी। यहाँ आकर आत्मविश्वास मिला और श्रीमती शमा जी से मेहंदी भी सीखी।

प्रश्न : शिक्षिका बनने का मौका कैसे मिला?

उत्तर: द्वारका सेक्टर 16 केंद्र की शिक्षिका अनीता जी का विवाह हो गया था, निरीक्षका श्रीमती पुष्पा शर्मा जी ने मुझे अस्थायी रूप से शिक्षिका के तौर पर वहां भेजा। करीब एक साल मैंने द्वारका केंद्र पर काम किया और अनुभव हासिल किया।

प्रश्न : बाद में आपने शिव मंदिर केंद्र में भी कार्य किया, उस विषय में बताएं?

उत्तर: जी, उर्मिल दीदी की कुछ पारिवारिक परेशानी की वजह से छह महीने उनकी जगह मैंने केंद्र में बच्चों को सिखाया। बाद में तीन महीने पार्लर में मैंने मेहंदी भी सिखाई। फिर मेरी

शादी होने के कारण मुझे कार्य छोड़ना पड़ा।

प्रश्न : शादी के बाद जीवन में क्या बदलाव आया?

उत्तर: नांगलोई में शादी हुई। परिवार में व्यस्तता और बेटे के जन्म के कारण सेवा भारती में सक्रिय नहीं रह पाई, लेकिन दीदियों से संपर्क बना रहा। मेरे विवाह में भी संस्था के सभी सर और कार्यकर्ताओं ने बहुत मदद की।

प्रश्न : वर्तमान में आप क्या कर रही हैं?

उत्तर: बेटा प्ले स्कूल जाने लगा तो मैंने फिर से काम शुरू किया। पहले पति तैयार नहीं थे, लेकिन सासू मां के समझाने पर वे मान गए। अब मैं अपने और पड़ोसियों के कपड़े सिलती हूँ। हाल ही में मेरी मां का देहांत हो गया और मेरी एक बिटिया भी हो गई है। इसलिए इस समय काम थोड़ा कम कर दिया है, लेकिन बिटिया थोड़ी बड़ी हो जाए, तो फिर से काम शुरू करूँगी।

प्रश्न : जीवन से आपने क्या सीखा?

उत्तर: मैंने सीखा है कि जीवन में आपका हुनर सबसे बड़ी पूंजी है, जिसे कोई छीन नहीं सकता। हालात जैसे भी हों, अगर सीखने और आगे बढ़ने का मन हो तो रास्ते खुद बन जाते हैं। जिम्मेदारी रुकावट नहीं, बल्कि ताकत बन सकती है। ❐

स्वास्थ्य संभाल और देखरेख : जीवन का असली धन

■ वीना गर्ग

मनुष्य जीवन में अनेक आकर्षण और उपलब्धियाँ होती हैं- धन, पद, प्रतिष्ठा, ज्ञान, यश। परंतु इन सबका आनंद तभी संभव है जब शरीर और मन दोनों स्वस्थ हों। हमारे दर्शन और संस्कृति ने सदैव स्वास्थ्य को जीवन की प्रथम संपदा माना है। कहा भी गया है- "पहला सुख निरोगी काया, दूसरा सुख घर में माया।"

अत: स्वास्थ्य केवल व्यक्तिगत आवश्यकता नहीं, बल्कि जीवन और समाज का मूलाधार है।

स्वास्थ्य का महत्व और उसके लाभ

स्वास्थ्य का संबंध केवल शारीरिक चुस्ती या रोगों की अनुपस्थिति से नहीं है, बल्कि यह जीवन के संपूर्ण संतुलन से जुड़ा है।

1. व्यक्तिगत स्तर

स्वस्थ तन और मन व्यक्ति की कार्यक्षमता को चरम पर ले जाते हैं। उत्साह और सकारात्मक ऊर्जा उसे न केवल अपने कर्तव्यों में सक्षम बनाती है, बल्कि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी वह संयम और धैर्य से निर्णय ले सकता है।

2. सामाजिक स्तर

जिस समाज के सदस्य स्वस्थ और सक्रिय होते हैं, वहाँ सहयोग और सौहार्द का वातावरण सहज ही निर्मित होता है। परिवार के संबंध मजबूत रहते हैं और सामाजिक दायित्व सहजता से पूरे किए जाते हैं।

3. आर्थिक एवं राष्ट्रीय स्तर

स्वास्थ्य उत्पादकता का आधार है। एक स्वस्थ श्रमिक अथवा कर्मचारी अपने श्रम और कौशल का पूरा लाभ राष्ट्र को देता है। इसके विपरीत, अस्वस्थ समाज का एक बड़ा हिस्सा संसाधनों को केवल उपचार पर खर्च करता है। इसीलिए विकसित देशों में स्वास्थ्य क्षेत्र को सुदृढ़ करने पर विशेष बल दिया जाता है, क्योंकि राष्ट्रीय समृद्धि और जनस्वास्थ्य का रिश्ता अभिन्न है।

4. दार्शनिक एवं आध्यात्मिक स्तर

स्वास्थ्य आत्मानुशासन और जीवनदृष्टि का प्रतीक भी है। जो व्यक्ति शरीर और मन दोनों के संतुलन में रहते हैं, वे जीवन को अधिक स्पष्ट दृष्टि से देख पाते हैं। स्वामी विवेकानंद का यह वचन सार्थक प्रतीत होता है- "मजबूत शरीर में ही मजबूत मस्तिष्क निवास करता है।"

स्वास्थ्य संवर्द्धन के उपाय

(क) संतुलित आहार

पोषक और विविध आहार स्वास्थ्य का मूलाधार है। थाली में अनाज, दालें, हरी सब्ज़ियाँ, फल और दूध का संतुलन होना आवश्यक है। तैलीय भोजन और जंक फूड का सीमित उपयोग ही स्वास्थ्य के लिए हितकारी है। अनुभव से उदाहरण: एक छात्रा जब नियमित नाश्ता छोड़ने लगी तो उसका ध्यान पढ़ाई से भटकने लगा। चिकित्सकीय परामर्श में कारण निकला-अनियमित भोजन। समयबद्ध भोजन और संतुलित आहार ने उसका प्रदर्शन पुन: सुधारा।

(ख) व्यायाम और योग

नियमित शारीरिक गतिविधि शरीर को सक्रिय रखती है और रोग प्रतिरोधक क्षमता को प्रबल करती है। योग और ध्यान मानसिक संतुलन के साधन हैं। आज चिकित्सा-विज्ञान भी मान रहा है कि व्यायाम और योग जीवन की दीर्घायु और उत्पादकता में अमूल्य योगदान करते हैं।

(ग) स्वच्छता और रोग निवारण

"स्वच्छता ही स्वास्थ्य है"-यह कथन केवल नैतिक उपदेश नहीं, चिकित्सा का मूल सिद्धांत है। स्वच्छ जल, स्वच्छ परिवेश और समय पर टीकाकरण व्यक्ति को अनेक बीमारियों से बचाते हैं। कोविड-19 का अनुभव इस सत्य का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

(घ) मानसिक स्वास्थ्य

तनाव, चिंता और अवसाद आज के युग की सबसे बड़ी चुनौतियाँ हैं। ध्यान, संगीत, साहित्य, सृजनात्मक गतिविधियाँ और स्वस्थ संबंध मन को हल्का और जीवन को संतुलित बनाते हैं। सच ही कहा गया है-"हंसी सबसे अच्छी दवा है।"

सरकारी प्रयास और नीतियाँ

भारत सरकार ने स्वास्थ्य क्षेत्र को प्राथमिकता देते हुए अनेक योजनाएँ प्रारंभ की हैं, जैसे- प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना, राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना, कर्मचारी राज्य बीमा

योजना, प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि परियोजना। इसके साथ ही योग शिविरों, खेलकूद कार्यक्रमों और शहरी पार्कों में खुले जिम के माध्यम से समाज को सक्रिय जीवनशैली अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

निष्कर्ष

स्वास्थ्य की देखभाल अलग से किया जाने वाला कार्य नहीं, बल्कि जीवनयात्रा का अभिन्न हिस्सा है। यह केवल एक व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी नहीं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय उत्तरदायित्व भी है।

"स्वास्थ्य वह बीज है जिससे जीवन का वृक्ष सदैव हरा-भरा रहता है।"

अत: हमें संकल्प लेना चाहिए कि-

हम संतुलित भोजन करेंगे,

नियमित योग और व्यायाम को अपनाएँगे,

स्वच्छता और मानसिक संतुलन पर ध्यान देंगे,

और अपने परिवार तथा समाज को भी इस दिशा में प्रेरित करेंगे। स्वस्थ व्यक्ति ही प्रसन्न नागरिक है, और प्रसन्न नागरिक ही समृद्ध राष्ट्र का निर्माण करता है। ❐

एक संदेश

निर्मल महाजन

बहिनो! कभी निराश न होना, साहस धैर्य कभी न खोना।
सुख दुख तो आते जाते, चले न इनका जादू टोना।
उचित नहीं दुख में घबराना, उचित नहीं सुख में इतराना।
उचित यही है हर स्थिति में, आगे आगे बढ़ते जाना।
देखों तूफानों में चलने वाला मांझी, तूफानों से है टकराता।
अपनी हिम्मत के बल, नौका अपनी पार लगाता।
न दुख में कभी रोता, न वह कभी है निराश होता।
हंसते-हंसते अपने धैर्य बल से, बीज सफलता के बोता।
देखो! चींटी इक छोटा सा प्राणी, लगन में उसके न कोई सानी,
कई बार चढ़ती गिरती, फिर भी हार कभी न मानी।
दृढ़ता धैर्य लगन ही, बनते उसके जीवन साथी,
अपनी लगन और मेहनत से, सफलता की मंजिल पाती।
जो सुख में फूले न समाते, परिश्रम करने से घबराती,
वे कभी सफल न हो पाते, वे अपने लक्ष्य न छू पाते।
सुनो यह सन्देश हमारा, कष्ट में कभी नहीं रोना।
रोना हो तो चुपचाप, एकान्त में बैठकर रो लेना। ❐

नारी की पहचान

साध्वी सुनंदा (वीणा प्रकाश)

हे नारी तू पृथ्वी सी महान है
जीवन की आधारशिला है
सृष्टि की महान देवी है
ईश्वर के बाद तू ही प्रेरणा है
सोलह संस्कारों की कर्ता है
तेरे बिना यह संसार अधूरा है
मानव को बनाने वाली माता है
सभी का जीवन तेरे पर आधारित है
कष्ट सहकर भी सभी को सहती है
ऋषि मुनि महापुरुष सभी को बनाती हैं
गार्गी सी विद्वान और धर्मात्मा है
राम और कृष्ण को तू बनाने वाली है
नारी तू स्वयं को जानती है
कि मैं कितनी महान व्यक्तित्व वाली है
आज कल सभी महापुरुष तेरे गुणगान करते हैं
हे महान नारी आज तुझे क्या हो गया है
क्यों तूने सत्ययुग को कलयुग में बदल दिया है
जाग नारी जाग पूरा संसार भ्रष्ट हो रहा है
महापुरुषों की जगह राक्षसों का निर्माण हो रहा है
इस धरती पर अत्याचारों ही हो रहे हैं
स्वयं पथ से क्यों भ्रष्ट हो रही है
ईश्वर हर समय तुझे ही निहार रहा है
सभी जगह सत्य ज्ञान की गंगा बहा देने वाली है
अज्ञान और पाखंडों को दूर कर देने वाली माता है
तुझे क्या करना था और क्या कर दिया है
अपने गुणों से खिलवाड़ मत कर तू
सबसे ऊपर है अपनी ही शक्ति से
सभी बुराइयों को दूर कर देने वाली दुर्गा माता है
अनंत गुणो की महान देवी को शत-शत नमन।
❐

ब्रह्म मुहूर्त में उठने के लाभ

■ हेमंत शर्मा

रात्रि के अंतिम प्रहर के तत्काल बाद के समय को ब्रह्म मुहूर्त कहते हैं। हमारे ऋषि मुनियों ने इस मुहूर्त का विशेष महत्व बताया है। उनके अनुसार यह समय निद्रा त्याग के लिए सर्वोत्तम है। ब्रह्म मुहूर्त में उठने से सौंदर्य, बल, विद्या, बुद्धि और स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। सूर्योदय से चार घड़ी पूर्व ब्रह्म मुहूर्त में ही जग जाना चाहिये। इस समय सोना शास्त्र निषिद्ध है।

ब्रह्म मुहूर्त यानी अनुकूल समय। रात्रि का अंतिम प्रहर अर्थात प्रातः 3 से 5 बजे का समय ब्रह्म मुहूर्त कहा गया है। ब्रह्ममुहूर्ते या निद्रा सा पुण्यक्षयकारिणी।

(ब्रह्ममुहूर्त की निद्रा पुण्य का नाश करने वाली होती है।)

ऋषि मुनियों के अनुसार सनातन धर्म में इस समय के लिए बेहद सुन्दर नाम है- अमृत बेला। ईश्वर भक्ति के लिए यह महत्व स्वयं ही सिद्ध हो जाता है। ईश्वर भक्ति के लिए यह सर्वश्रेष्ठ समय है। इस समय उठने से मनुष्य को सौंदर्य, लक्ष्मी, बुद्धि, स्वास्थ्य आदि की प्राप्ति होती है। उसका मन शांत और तन पवित्र होता है। ब्रह्म मुहूर्त में उठना हमारे जीवन के लिए बहुत लाभकारी है। इससे हमारा शरीर स्वस्थ होता है और दिनभर स्फूर्ति बनी रहती है। स्वस्थ रहने और सफल होने का यह ऐसा फार्मूला है जिसमें खर्च कुछ नहीं होता। केवल आलस्य छोड़ने की जरूरत है।

पौराणिक महत्व

वाल्मीकि रामायण के अनुसार श्रीहनुमान ब्रह्ममुहूर्त में ही अशोक वाटिका पहुंचे। जहां उन्होंने वेद मंत्रों का पाठ करते माता सीता को सुना

शास्त्रों में भी इसका उल्लेख है-

वर्णं कीर्तिं मतिं लक्ष्मीं स्वास्थ्यमायुश्च विदन्ति।
ब्राह्मे मुहूर्ते संजाग्रच्छि वा पंकज यथा।।

अर्थात- ब्रह्म मुहूर्त में उठने से व्यक्ति को सुंदरता, लक्ष्मी, बुद्धि, स्वास्थ्य, आयु आदि की प्राप्ति होती है। ऐसा करने से शरीर कमल की तरह सुंदर हो जाता हे।

ब्रह्म मुहूर्त और प्रकृति

ब्रह्म मुहूर्त और प्रकृति का गहरा नाता है। इस समय में पशु-पक्षी जाग जाते हैं। उनका मधुर कलरव शुरू हो जाता है। कमल का फूल भी खिल उठता है। मुर्गे बांग देने लगते हैं। एक प्रकार से प्रकृति भी ब्रह्म मुहूर्त में चैतन्य हो जाती है। यह प्रतीक है उठने, जागने का। प्रकृति हमें संदेश देती है ब्रह्म मुहूर्त में उठने के लिए।

सफलता व समृद्धि

आयुर्वेद के अनुसार ब्रह्म मुहूर्त में उठकर टहलने से शरीर में संजीवनी शक्ति का संचार होता है। यही कारण है कि इस समय बहने वाली वायु को अमृततुल्य कहा गया है। इसके अलावा यह समय अध्ययन के लिए भी सर्वोत्तम बताया गया है क्योंकि रात को आराम करने के बाद सुबह जब हम उठते हैं तो शरीर तथा मस्तिष्क में भी स्फूर्ति व ताजगी बनी रहती है।

ब्रह्ममुहूर्त के धार्मिक, पौराणिक व व्यावहारिक पहलुओं और लाभ को जानकर हर रोज इस शुभ घड़ी में जागना प्रारंभ करें तो बेहतर परिणाम मिलेंगे।

ब्रह्म मुहूर्त में उठने वाला व्यक्ति सफल, सुखी और समृद्ध होता है, क्यों? क्योंकि जल्दी उठने से दिनभर के कार्यों और योजनाओं को बनाने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है। इसलिए न केवल जीवन सफल होता है। शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहने वाला हर व्यक्ति सुखी और समृद्ध हो सकता है। कारण वह जो काम करता है उसमें उसकी प्रगति होती है। विद्यार्थी परीक्षा में सफल रहता है। जॉब (नौकरी) करने वाले से बॉस खुश रहता है। बिजनेसमैन अच्छी कमाई कर सकता है। बीमार आदमी की आय तो प्रभावित होती ही है, उल्टे खर्च बढ़ने लगता है। सफलता उसी के कदम चूमती है जो समय का सदुपयोग करे और स्वस्थ रहे। अतः स्वस्थ और सफल रहना है तो ब्रह्म मुहूर्त में उठें।

वेदों में भी ब्रह्म मुहूर्त में उठने का महत्व और उससे होने वाले लाभ का उल्लेख किया गया है।

प्रातारत्नं प्रातरिष्वा दधाति तं चिकित्वा प्रतिगृह्यनिधत्तो।
तेन प्रजां वर्धयमान आयू रायस्पोषेण सचेत सुवीरः।।

– ऋग्वेद-1/125/1

अर्थात- सुबह सूर्य उदय होने से पहले उठने वाले व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। इसीलिए बुद्धिमान लोग इस समय को व्यर्थ नहीं गंवाते। सुबह जल्दी उठने वाला व्यक्ति स्वस्थ, सुखी, ताकतवाला और दीर्घायु होता है।

यद्य सूर उदितोऽनागा मित्रोऽर्यमा। सुवाति सविता भगः।

– सामवेद-35

अर्थात- व्यक्ति को सुबह सूर्योदय से पहले शौच व स्नान कर लेना चाहिए। इसके बाद भगवान की उपासना करना चाहिए। इस समय की शुद्ध व निर्मल हवा से स्वास्थ्य और संपत्ति की वृद्धि होती है।

उद्यन्त्सूर्यं इव सुप्तानां द्विषतां वर्च आददे।

अथर्ववेद- 7/16/2

अर्थात- सूरज उगने के बाद भी जो नहीं उठते या जागते उनका तेज खत्म हो जाता है।

व्यावहारिक महत्व

व्यावहारिक रूप से अच्छी सेहत, ताजगी और ऊर्जा पाने के लिए ब्रह्ममुहूर्त बेहतर समय है। क्योंकि रात की नींद के बाद पिछले दिन की शारीरिक और मानसिक थकान उतर जाने पर दिमाग शांत और स्थिर रहता है। वातावरण और हवा भी स्वच्छ होती है। ❐

भिन्नता और बदलाव : जीवन का स्वभाव

■ **डॉ संजय जिंदल**

हम सब इस पृथ्वी पर एक-दूसरे से भिन्न हैं। अगर हम अपने घर को देखें- माता-पिता, भाई-बहन, जीवनसाथी, बच्चे-हर किसी का स्वभाव, सोच, बोलने का तरीका अलग है। फिर भी हम संयम और संतुलन से सबको सहर्ष स्वीकार करते हैं, मान सम्मान देते हैं।

यही संतुलन हमें मनुष्य बनाता है। यह भिन्नता घर से बाहर भी हर जगह झलकती है। और जब इतनी विविधताएँ हैं, तो बदलाव तो स्वाभाविक ही है। जो बदलाव को सहजता से स्वीकार करता है, वही उन्नति की ओर बढ़ता है।

अगर हम स्वयं को देखें, तो पाएँगे कि हम छह महीने पहले, एक साल पहले, दो साल पहले जैसे थे, आज वैसे नहीं हैं। और आने वाले समय में छह महीने बाद, दो साल बाद, पाँच साल बाद-हम फिर बदल चुके होंगे। जब हम स्वयं में इतने परिवर्तन स्वीकार करते हैं, तो दूसरों की भिन्नताएँ हमें क्यों खटकती हैं? यह एक गहरा आत्मचिंतन का विषय है।

जब हम यह मान लेते हैं कि भिन्नता और बदलाव जीवन का स्वभाव है, तभी हम बेहतर संबंध बना सकते हैं और संयुक्त रूप से, अनुशासित रह कर, शांति से- अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं।

स्वीकार्यता ही सामंजस्य का पहला कदम है।

जीवन निर्माण के सूत्र

चरित्र निर्माण – संस्कार

संस्कार ही जीवन की नींव हैं, जो सत्य, ईमानदारी और आत्मबल का संचार करते हैं।

व्यक्ति निर्माण – संघ

संगठन और संगत व्यक्ति को आकार देते हैं और जीवन को दिशा व उद्देश्य देते हैं।

कार्यकुशलता निर्माण – गुरु

गुरु का मार्गदर्शन ही दक्षता और अनुशासन का आधार है।

नेतृत्व निर्माण – सेवा

सेवा भाव से जुड़े व्यक्ति में नेतृत्व के गुण स्वत: विकसित होते हैं।

विचार निर्माण – अध्ययन

अध्ययन, चिंतन और मनन से विचार गहरे और दृष्टिकोण विस्तृत होते हैं।

संस्कार निर्माण – परिवार

परिवार ही पहला विद्यालय है, जहाँ अनुशासन और सहनशीलता के बीज बोए जाते हैं।

आत्मविश्वास निर्माण – साधना

निरंतर अभ्यास और आत्मअनुशासन से आत्मविश्वास का जन्म होता है।

राष्ट्र निर्माण – युवा

ऊर्जावान और संस्कारवान युवा ही राष्ट्र का भविष्य गढ़ते हैं।

संपूर्णता निर्माण – समर्पण

कर्तव्य के प्रति समर्पण ही साधना की पूर्णता है।

स्वास्थ्य निर्माण – अनुशासन

संतुलित आहार, व्यायाम और संयमित जीवन से शरीर और मन दोनों स्वस्थ रहते हैं।

संबंध निर्माण – विश्वास

विश्वास और संवाद ही स्थायी संबंधों की नींव हैं।

सृजनशीलता निर्माण – कल्पना

नई कल्पनाएँ और रचनात्मक सोच ही जीवन को नवीन दिशा देती हैं।

आध्यात्मिक निर्माण – प्रार्थना

ईश्वर स्मरण और प्रार्थना से आत्मा को शांति और उद्देश्य मिलता है।

ये सूत्र एक समग्र जीवन दर्शन प्रस्तुत करते हैं- व्यक्ति से राष्ट्र तक, गुरु से परिवार तक, साधना से सेवा तक। ❐

अंगदान की महिमा

■ आचार्य अनमोल

मानव-सेवा करने के भी कई रूप होते हैं। वस्त्र दान देकर, धन-दान देकर, अभय दान देकर और विद्यादान देकर किसी भी रूप में परोपकार हेतु मानव-सेवा की जा सकती है। इसी सेवा की कड़ी में अंगदान का बड़ा महत्व माना जाता है। वर्तमान में अंगदान करने के प्रति लोगों का बहुत ध्यान जा रहा है। वास्तव में जो व्यक्ति मानवोचित अपने शरीर के अंगों से रहित है अर्थात जिनका कोई अंग विकल है, उनके लिए सामान्य जीवन जीना कई अर्थों में कठिन हो जाता है। यद्यपि ऐसे लोगों के लिए किसी भी तरह का आर्थिक सहयोग या अन्य सहयोग उसकी पूर्ति नहीं कर सकता लेकिन समाज में हम ऐसे लोगों के प्रति उनकी गहरी संवेदना को समझ कर उनकी सहायता जीवित अंग को देकर कर सकते हैं। यह सहायता सजीव अंग देकर भी की जाती है तो विकल्प अंग के रूप में अनेक बार यह कृत्रिम अंग देकर भी की जाती है।

अभी हम 13 अगस्त 2025 को 'विश्व अंग दिवस' मना चुके हैं। सही अर्थों में अंगदान के प्रति जागरूकता फैलाने और लोगों में इससे संबंधित फैली भ्रम की स्थितियों को दूर करने के लिए दुनियाभर में यह दिवस प्रचार करने की भावना से मनाया जाता है। अंगदान करने के तीन स्वरूप माने जाते हैं। पहला है- किसी जीवित व्यक्ति द्वारा स्वेच्छा से किसी दूसरे जीवित व्यक्ति को बहुत जरूरी अवस्था में अंग देना। दूसरा है- जरूरतमंद व्यक्ति को किसी मृत व्यक्ति की देह से जरूरी मानव अंग देने की सहायता देना। इस दूसरे वर्ग के अंतर्गत मृत व्यक्ति के अंगों से अनेक लोगों को अंग दान करके सहायता की जा सकती है और उनकी जान बचाई जा सकती है। और तीसरा है- कृत्रिम अंग। आजकल कृत्रिम अंगों के द्वारा भी सहायता की जाती है। इस वर्ग में अधिकतर हाथ और पर की कमियों को कृत्रिम अंगों का प्रयोग करके दूर किया जाता है। कुछ भी हो लेकिन अंगदान करने के प्रति धीरे-धीरे लोगों में जागरूकता बढ़ रही है। इसीलिए अंगदान करने के प्रति अब अपने देश में भी लोग अपने जीते जी ही अपने अंगदान करने के लिए आगे आ रहे हैं। इसमें प्रमुख रूप से बहुसंख्य व्यक्ति अपने मरने के बाद अपनी आँखों को दान करने के लिए किसी भी अस्पताल में रजिस्ट्रेशन कराते हुए देखे जा सकते हैं। इसी कड़ी में कुछ लोग अपने मरने के बाद अपना शरीर किसी भी अस्पताल में मेडिकल शोध के लिए दान देने का शपथ पत्र भर रहे हैं। निश्चित तौर पर यह अंगदान करने का अभियान धीरे-धीरे पूरे भारत देश में बढ़ता जा रहा है।

मेडिकल ग्राउंड पर कहा जाता है कि एक मृत व्यक्ति का शरीर अन्य आठ जीवित लोगों की सहायता कर सकता है। मृत व्यक्ति के हृदय, गुर्दा, फेफड़ा, यकृत, आँत, आँख, अस्थि, मज्जा आदि जरूरतमंद दूसरे लोगों को प्रमुख रूप से अंगदान के रूप में प्रत्यारोपण किए जा सकते हैं। आँकड़ों के अनुसार भारत में हर साल लगभग 17,000 से 18,000 अंग-प्रत्यारोपण होते हैं, जो विश्व में अमेरिका और चीन के बाद सबसे अधिक हैं। अंगदान करने के इस क्षेत्र में प्रगति को देखा जाए तो ज्ञात होता है कि 2016 में अंग प्रत्यारोपण की औसत संख्या 2.43 थी, वह 2022 में बढ़कर 3.05 हो गई है और अब अगस्त, 2025 तक इसकी संख्या कहीं अधिक जा चुकी है।

ये आंकड़े बता रह हैं कि धीरे-धीरे ही सही पर हम इस क्षेत्र में निश्चित ही आगे बढ़ रहे हैं। इस तथ्य को भी हमें खुले दिल से स्वीकार करना चाहिए कि वर्तमान में हमें जितनी जरूरत है, उतने अंग हमें नहीं मिल पाते, लेकिन सुधार की गति बता रही है कि आने वाले कुछ वर्षों में हम इस अंतर को यथासंभव दूर कर पाएँगे। और हर जरूरतमंद को अंग मिल सकेगा। यह उद्देश्य तभी सफल हो सकता है, जब इसका जन सामान्य में अधिक प्रचार किया जाए और लोगों को अंगदान करने के प्रति जागरूक किया जाए।

अंगदान करने के विचार में कुछ धार्मिक तथा परंपरावादी सोच भी आड़े आती है। जिसके कारण अभी तक अपेक्षित अंगदान करने की उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो पाई है। इन सब बातों के बावजूद भी इस क्षेत्र में हम भारतीय लोगों का रुझान धीरे-धीरे बढ़ रहा है। नई सोच पुरानी सोच से आगे निकलते जा रही है। नई पीढ़ी इस पुरानी सोच को दरकिनार करके अंगदान करने के प्रति अग्रसर हो रही है। इस उद्देश्य की पूर्ण सफलता के लिए सोशल मीडिया के विभिन्न साधनों जैसी रेडियो, अखबार, टीवी, मोबाइल आदि के द्वारा भी और अधिक जागरूक किया जा सकता है। यह भी सर्वथा सत्य है कि आज हम एक ऐसे विचारवान तथा नई सोच वाले समाज की ओर बढ़ रहे हैं, जहाँ लोग जरूरतमंद दूसरे का ध्यान रखते हैं। यह भाव प्रगति का सूचक है। इसलिए ही नहीं सोच वाली पीढ़ी का विचार है कि किसी तरह दूसरे की अधिक से अधिक मदद करनी चाहिए। आखिरकार यह शरीर नश्वर ही तो है किसी के काम आएगा तो अच्छा ही है।

अंगदान की महिमा बताते हुए मुझे कुछ पंक्तियाँ याद आ रही हैं –

अंगदान की महिमा जग में,
सबसे बहुत निराली है।
इससे ही मानव जीवन की,
होती देखा-भाली है।।
अंग विकल हो जाए समझो,
टूटी पादप डाली है।
दान करे जो निज अंगों को,
मिलती उसको ताली है।।
है 'अनमोल' अंग मानव का,
यह सुविधा की थाली है।
दें हम इससे जीवन सबको,
देशभक्ति मतवाली है।। ❐

केंद्र सरकार की नीतियां और सेवाएं

■ कमलेश त्रिपाठी

केंद्र सरकार की नीतियाँ (Policies) : केंद्र सरकार विभिन्न क्षेत्रों में नीतियाँ बनाती है, जिनमें शामिल हैं।

शिक्षा नीति

नई शिक्षा नीति 2020: कौशल आधारित शिक्षा, बहुभाषी शिक्षा, डिजिटल लर्निंग आदि को बढ़ावा देती है।

स्वास्थ्य नीति

आयुष्मान भारत योजना: 5 लाख रुपये तक का स्वास्थ्य बीमा।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन: मातृ-शिशु स्वास्थ्य, ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाएं आदि।

कृषि नीति

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (PM&KISAN): किसानों को 6000 रुपये वार्षिक सहायता। ई-नाम (e-NAM): कृषि उत्पादों की ऑनलाइन बिक्री व्यवस्था।

पर्यावरण नीति

राष्ट्रीय हरित योजना: वृक्षारोपण, प्रदूषण नियंत्रण आदि। राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (NCAP)।

डिजिटल इंडिया नीति

सभी सेवाओं का डिजिटलीकरण, जैसे डिजिलॉकर, उमंग ऐप आदि।

केंद्र सरकार की सेवाएँ (Services) : भारत सरकार नागरिकों को अनेक प्रकार की सेवाएं प्रदान करती है:

डिजिटल सेवाएं : DigiLocker: दस्तावेजों को डिजिटल रूप में रखने की सुविधा। UMANGApp: एक ऐप से अनेक सरकारी सेवाओं का उपयोग।

सामाजिक कल्याण सेवाएं : राशन कार्ड ध च्वै: सब्सिडी वाले खाद्यान्न।

मनरेगा: ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना।

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना: मुफ्त गैस कनेक्शन।

नागरिक सेवाएं : पासपोर्ट सेवा, चछ कार्ड, आधार कार्ड आदि।

शिकायत और सुझाव

CPGRAMS: नागरिक शिकायत निवारण प्रणाली।

MyGov: सरकार को सुझाव देने का ऑनलाइन मंच।

प्रधानमंत्री योजनाएँ भारत सरकार द्वारा शुरू की गई विभिन्न कल्याणकारी और विकासपरक योजनाएँ हैं, जिनका उद्देश्य समाज के सभी वर्गों, विशेषकर गरीबों, किसानों, महिलाओं, युवाओं और बुजुर्गों का सशक्तिकरण करना है।

यहाँ कुछ प्रमुख प्रधानमंत्री योजनाओं की सूची और उनका संक्षिप्त विवरण दिया गया है:

1. **प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना** (PMUY)
   लक्ष्य: गरीब परिवारों को मुफ्त गैस कनेक्शन प्रदान करना।
   लाभ: महिलाओं को लकड़ी के धुएं से मुक्ति।
   पात्रता: गरीबी रेखा से नीचे (BPL) परिवार की महिला।
2. **प्रधानमंत्री आवास योजना** (PMAY)
   लक्ष्य: 2022 तक सभी के लिए आवास।
   शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के लिए।
   सब्सिडी आधारित होम लोन योजना।
3. **प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि** (PM&KISAN)
   लक्ष्य: किसानों को वित्तीय सहायता।
   6000 रुपये सालाना सीधे खाते में ट्रांसफर।
   पात्रता: सभी छोटे और सीमांत किसान।
4. **प्रधानमंत्री जन धन योजना** (PMJDY)
   लक्ष्य: हर नागरिक को बैंकिंग सुविधा देना।
   जीरो बैलेंस अकाउंट, रुपे कार्ड, बीमा कवर।
   वित्तीय समावेशन को बढ़ावा।
5. **प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना** (PMGSY)
   लक्ष्य: ग्रामीण क्षेत्रों को सड़कों से जोड़ना।
   विकासशील गांवों में सड़क निर्माण।
6. **प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना** (PM SVANidhi)
   लक्ष्य: रेहड़ी-पटरी वालों को ऋण देना।
   10,000 तक का बिना गारंटी लोन।
   जिटल लेन-देन पर कैशबैक भी।
7. **प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना** (PMSBY)
   लाभ: दुर्घटना बीमा 2 लाख।
   वार्षिक प्रीमियम: 20
   18-70 वर्ष की आयु के लोग।
8. **प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना** (PMJJBY)
   लाभ: जीवन बीमा 2 लाख।
   वार्षिक प्रीमियम: 436
   18-50 वर्ष की आयु।
9. **प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम** (PMEGP)
   लक्ष्य: युवाओं को स्वरोजगार के लिए सहायता।
   सूक्ष्म उद्योगों को ऋण और सब्सिडी।
10. **प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना** (PMFBY)
   लक्ष्य: किसानों की फसल का बीमा।
   प्राकृतिक आपदा, सूखा, अतिवृष्टि आदि से सुरक्षा। ❐

हिन्दी से हिन्दी दिवस तक

■ सोमेश कुमार पाण्डेय

हिन्दी भाषा के महान पुरोधा तथा आधुनिक हिन्दी गद्य के जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने स्वीकारा है कि सर्व उन्नति का मूल निज भाषा में प्रतिष्ठित रहता है- 'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल' और उसे बिसरा देने का अर्थ है कि आत्मोन्नति तथा राष्ट्रोन्नति में बड़ी बाधा उत्पन्न होना।

संपूर्ण मानव जाति को शांति का ध्येय तथा उपदेश से पूरित एवं प्रतिष्ठित करने वाला हमारा भारत सहस्त्र वर्षों से वाणी की विविधता का आविष्कार एवं समावेशक रहा है। भारत की वाणी समस्त मानव महासागर को जगत जंजाल से खींचकर उसे पुनः किसी जंगल अथवा अंधकूप में धकेलने का काम नहीं करती वरन उसे अनन्त आकाश हो जाने का बल प्रदान करती है। जीव मात्र का कल्याण कर सकने का सामर्थ्य भारत की वाणी अथवा भाषा में आविर्भाव काल से निहित तथा विदित रहा है।

यह निरा या कोरा अभिमान नहीं है कि जहाँ धराधाम के एक भाग पर मानव जाति अभी अपनी तंद्रावस्था और भोगलिप्सा की दशा से ग्रस्त थी, वहीं हमारा भारत आत्म-अध्यात्म के ज्ञान बल पर भाषा की शक्ति के सहारे अध्यात्म के प्रकाश से जीवनिद्रा को तोड़ रहा था। अंड से पिंड तक को भाषा से बांध देने का अथक श्रम कर रहा था। ज्ञान-विज्ञान के नये आकाशीय आयाम गढ़ रहा था। सृष्टि के सिद्धांतों को, जीव-जगत के पारस्परिक संबंधों को लिपिबद्ध कर रहा था। इसी हितकारी तपस्या का प्राप्त फल संस्कृत भाषा और कालांतर के प्रभाव से निर्मित हिंदी भाषा है।

मानव मुक्ति हमारे भारत का सर्वोच्च जयघोष रहा है और सभी भाषाओं अथवा भाषा के परिवर्तित, परिशोधित स्वरूपों ने अपना मूल छोड़ देने का साहस कभी नहीं किया। हमारी हिन्दी भाषा भी इन्हीं परिवर्तित एवं परिशोधित सतत् यात्रा का प्रतिफल है जिस पर कालांतर का प्रभाव तो है किन्तु अपने मूल का अभाव नहीं।

"हमारी कल्याणकारी संस्कृत भाषा ही अपने परिधान में कुछ और सितारे जोड़कर आई है जिसे हम हिन्दी भाषा के नाम से विभूषित करते हैं।"

जिस प्रकार यह भौतिक जगत कालबद्ध है उसी प्रकार भाषा का भी अपना इतिहास, वर्तमान तथा भविष्य होता है। आवश्यकता आविष्कार की जननी है और भाषा इसी आवश्यकता की कोख का आविष्कार है। हमारी हिन्दी भाषा की जड़ संस्कृत भाषा में सन्निहित है। वहां से उठा वह प्रवाह लौकिक, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि स्वरूपों को धारण करता हुआ लगभग एक सहस्त्र वर्ष पूर्व हिन्दी भाषा में परिणत हुआ। देखा जाए तो हमारी हिंदी भाषा की आयु एक सहस्त्र के लगभग है। इस एक सहस्त्र वर्ष में हिन्दी भाषा ने अपने गौरवशाली अतीत के प्रति सच्ची कृतज्ञता अर्पित की एवं अपने भविष्य के स्वर्णिम स्वप्न भी देखे।

आदिकालीन कवि अमीर खुसरो से लेकर मध्यकालीन कवियों जेसे तुलसी, मीरा, सूरदास, जायसी आदि से लेकर आधुनिककालीन कवि स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी तक सभी ने अपनी संवाद सेवा हिंदी भाषा में की। हिन्दी को जन-जन अथवा जनमानस की भाषा के रूप में पहचानते हुए विविधतायुक्त सृजनात्मक साहित्य का सृजन किया। मातृभूमि भारत और मातृभाषा हिंदी के सच्चे उपासक की भाँति आगामी पीढ़ियों को हिंदी भाषा के प्रति प्रेम और सम्मान से युक्त रहने के प्रेरणास्पद संदेश भी दिये। इसी संदेश को प्रत्येक भारतीय तक पहुंचाने के लिये 14 सितम्बर (हिन्दी दिवस) एक विस्तृत मंच प्रदान करता है।

हिन्दी दिवस का इतिहास और इसे दिवस के रूप में मनाने का कारण बहुत पुराना है। 1918 में सृजनपति तिवारी ने इसे जनमानस की भाषा कहा था और इसे देश की राष्ट्रभाषा भी बनाने को कहा था। लेकिन आजादी के बाद ऐसा कुछ नहीं हो सका। सत्ता में आसीन लोगों और जाति-भाषा के नाम पर राजनीति करने वालों ने कभी हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनने नहीं दिया।

हिन्दी दिवस प्रत्येक वर्ष

14 सितम्बर, 1949 को ही संविधान सभा ने यह निर्णय

लिया था कि हिन्दी केन्द्र सरकार की आधिकारिक भाषा होगी। चूंकि भारत में अधिकतर क्षेत्रों में हिन्दी भाषा बोली जाती थी, इसलिए हिन्दी को राजभाषा बनाने का निर्णय लिया और इसी निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिन्दी को प्रत्येक क्षेत्र में प्रसारित करने के लिय 1953 से पूरे भारत में 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थापित करवाने के लिए काका कालेलकर, हजारी प्रसाद द्विवेदी, सेठ गोविन्ददास आदि ने अथक प्रयास किये।

हिंदी की वर्तमान स्थिति

संघीय स्तर पर राजभाषा के रूप में अंग्रेजी का वर्चस्व आज भी कायम है। अंग्रेजी आज दक्षिण भाषा-भाषियों के विरोध के कारण ही नहीं, बल्कि प्रशासकों एवं समाज के उच्च वर्ग के अपने निहित स्वार्थ के कारण, राजकाज के सतर पर, उच्च शिक्षा के स्तर पर छाई हुई है। जब तक अंग्रेजी के साथ प्रतिष्ठा, सत्ता, नौकरी और पैसा जुड़ा रहेगा, तब तक लोगों से यह अपेक्षा करना कि वे अपने बच्चों को अंग्रेजी न पढ़ाएं, एक तथ्य को अनदेखा करना होगा।

गाँधी जी ने अंग्रेजी के इस मोह से पिंड छुड़ाना 'स्वराज' का अनिवार्य अंग माना था, किन्तु देश की विडंबना है कि वह इस मोह से छूटने की बजाय दिन-प्रतिदिन उसमें जकड़ता जा रहा है। अंग्रेजी के 3 फीसदी लोग, हिंदी के 44 फीसदी लोगों पर हावी हैं। अत: न केवल राजनीतिक निर्णय के रूप में, बल्कि आम जनता के भावात्मक एवं बौद्धिक विकास की दृष्टि से हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप पूरे देश में, सभी प्रादेशिक सरकारों द्वारा अंगीकार करना चाहिए।

प्रत्येक 14 सितंबर को सरकारी कार्यालय प्राय: हिंदी दिवस, सप्ताह, पखवाड़ा या मास का आयोजन करते हैं किन्तु जितनी निष्ठा से हिंदी को अपनाने पर बल देना चाहिए वह नहीं करते। राजभाषा के रूप में कभी हम अंग्रेजी के अनुवाद बहुत जटिल कर बैठते हैं, कभी वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित तकनीकी शब्दों का प्रयोग नहीं करके भ्रम फैलाते हैं, कभी हिंदी के शब्द कोश, टंकण, कंप्यूटर आदि खरीदने में शिथिलता बरतते हैं, कभी अंग्रेजी का जो ढर्रा चला आ रहा है उसे बदलने में संकोच या आलस करते हैं।

दरअसल, हर सरकारी कर्मचारी यदि अपने राष्ट्रीय एवं भाषाई बोध से गर्वित होकर कष्ट उठाकर भी हिंदी को अपनाने का संकल्प कर ले तो राजभाषा के रूप में हिंदी का शत-प्रतिशत व्यवहार संभव हो सकता है। हम संकल्प लें और करें, अन्य कोई उपाय नहीं है। यह जानते हुए भी कि हिंदी को भारत की पहचान के लिए जीवित रहना ही नहीं मुखर रहना भी आवश्यक है।

अपनी पहचान के लिए हमें हर हाल में, इस संबंध को समझना और जीना होगा। बिना इसके भारतीयता का कोई अर्थ नहीं रह जाता। हिंदी बहती नदी की धारा की तरह सबके लिए उपयोगी और कल्याणकारी रही है। यही कारण है गैर-हिंदी भाषा-भाषी क्षेत्रों के हिंदी उन्नायकों ने हिंदी को जनभाषा के रूप में स्वीकार करते हुए इसके उत्थान के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। वह चाहे गुजराती भाषी महर्षि दयानंद और गांधी रहे हों, बंगाल के राजाराम मोहन राय, केशवचन्द्र सेन और रवीन्द्र नाथ टैगोर तथा नेता जी सुभाष रहें हों, या महाराष्ट्र के नामदेव, गोखले और रानाडे रहे हों। इसी तरह तमिलनाडू के सुब्रह्मण्यम भारती, पंजाब के लाला लाजपत राय, आन्ध्र प्रदेश के प्रो. जी. सुंदर रेड्डी जैसे अनेक अहिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए।

जिस प्रकार व्यक्ति के लिए आत्म संशय सर्वथा घातक होता है उसी प्रकार किसी भी राष्ट्र का विकास उसकी अपनी भाषा में ही निहित होता है और यदि अपनी ही भाषा के प्रति हेयता और अनदेखापन तथा संशय की भावना उठने लगे तो उस समाज या राष्ट्र का पतन निश्चित हो जाता है। निज भाषा में जो वैचारिक स्वतंत्रता व्याप्त होती है वो संकुचित होने लगती है तथा कालांतर में उसका विलोप हो जाता है। इतिहास और विरासतों के ज्ञान से संपृक्त भाषा का ही प्रयोगबल जब क्षीण होने लगेगा तो यह एक राष्ट्र के कई आयामों और पहचानों को ही आघात पहुंचाने लगेगा इसलिये यह अत्यंत आवश्यक है कि हम भारतीय अपनी धूल तथा मूल की प्राप्तियों से प्रेम और सम्मान करें और उन्हें संजो कर रखें।

हिन्दी भाषा की हम भारतीयों से यही आकांक्षा है कि हम इसे व्यवहार या बोलचाल की ही भाषा बनाकर न छोड़ दें, बल्कि इसे अपने राष्ट्र की, अपने स्वाभिमान की, अपने पहचान की, वैचारिक स्वतंत्रता की, भावनाओं की सूक्ष्मातिसूक्ष्म अभिव्यक्ति की, आत्मविकास की, अन्वेषणों आदि की भाषा बनाएँ। ❐

(लेखक दिल्ली विश्वविद्यालय में शोधार्थी हैं)

सेवाधाम के बच्चों का जीवन परिवर्तन

■ दीप्ति अग्रवाल

सेवाधाम 1988 से निरंतर भारतवर्ष के उपेक्षित, वंचित व अभावग्रस्त बच्चों के जीवन में बदलाव ला रहा है। जिन भी परिवार में बच्चों के पालन पोषण में उन्हें कठिनाई आती है, चाहे वह किसी भी कारण से हो, जैसे आर्थिक स्थिति ठीक न हो, गाँव में अच्छे विद्यालय न हो या गाँव का माहौल ठीक न हो। तो गाँव के विद्यालय में ही परीक्षा करवायी जाती है। जिसमें उत्तीर्ण होके, बच्चे दिल्ली स्थित सेवाधाम आ सकते हैं। यहाँ पर बच्चों का हर प्रकार से ध्यान दिया जाता है, जैसे पढ़ाई, स्वास्थ्य, संस्कार, नेतृत्व कौशल आदि, उनमें यह गुण सिखाए जाते हैं। सेवा धाम बच्चों से पारिवारिक आत्मीयता का भाव रखकर, बच्चों के भविष्य को स्वर्णिम बनाने में भूरे तन मन धन से लगा है। विद्यालय के शिक्षक, प्रधानाचार्या व सेवा भारती के कार्यकर्ता, इस तरह से बच्चों पर मेहनत करते हैं, जिससे उन्हें अपने परिवारों की कमी न महसूस हो सके और वे बच्चे आगे चलकर देश के अच्छे नागरिक बन सकें और देश सेवा में लग सकें।

इस श्रृंखला में एक कड़ी और जुड़ गई है। इस वर्ष सेवाधाम के तीन बच्चों को दिल्ली यूनिवर्सिटी के बीटेक प्रोग्राम में प्रवेश मिला व दो बच्चों को डिप्लोमा इन इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में प्रवेश मिला। दाखिले की प्रक्रिया को सुचारु रूप से करने हेतु निधि रस्तोगी जी व प्रमोद कुमार राजोरा जी का भरपूर सहयोग रहा। सेवा धाम के शिक्षकों के अतिरिक्त प्रमोद जी सेवाधाम जाकर सभी बच्चों को गणित विषय को और अधिक सरलता व सुचारु रूप से पढ़ाते हैं, जिससे सेवाधाम के बच्चे अन्य किसी भी स्कूल के बच्चों से पीछे न रह जाए। प्रमोद जी सप्ताह में तीन दिन सेवाधाम जाकर अपनी सेवाएँ देते हैं। पढ़ाते पढ़ाते बच्चों से उनका अपनापन जुड़ गया। स्कूल पूरा हुआ, परीक्षा समाप्त हुई, बच्चे अपने अपने गाँव चले गए। समय आया कॉलेज में दाखिले के लिए आवेदन करने का तो भी प्रमोद जी पीछे नहीं रहे, अपनी पूरी ज़िम्मेदारी निभाई व निरंतर बच्चों से बातचीत करके कुछ को यहाँ वापिस बुलाया, नेटवर्क न होने की वजह से सम्पर्क होना मुश्किल था किन्तु थके नहीं रुके नहीं, निधि जी भी पीछे ढाल बनकर खड़ी रहीं, न किसी के कागज़ पूरे हैं तो किसी के कागज़ ईमेल करवाकर प्रमोद जी ने खुद ही आवेदन पत्र भरा। कई बच्चों को समझाना भी बेहद कष्टदायक था, वे मानना ही नहीं चाहते थे, कि उनको दिल्ली यूनिवर्सिटी के कॉलेजों में प्रवेश मिल जाएगा। अंत में सबकी मेहनत प्रभु की कृपा से रंग लाई और पाँच बच्चे अपनी मंज़िल की ओर अग्रसर हो गए। बस ज़रूरत है, सेवा भारती इनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी रहे। थोड़ा मार्गदर्शन होगा तो, ये बच्चे भी आगे किसी की सहायता करने लायक बनेंगे। अपने अपने गाँव का, माँ बाप का और आगे चलकर देश का नाम रोशन करेंगे। सेवा भारती की तरह माँ भारती को परम वैभव तक पहुँचाने का कार्य करेंगे।

अपने गाँव के सौ बच्चों में से इनका चयन हुआ, तो जीवन की एक नई यात्रा शुरू हुई। कुछ न कुछ बड़े बदलाव के लिए ही ये सेवाधाम पहुँचे। संघ के इतने बड़े तंत्र के कार्यकर्ताओं ने इनकी प्रतिभा को समझते हुए, इनके गाँव के शिक्षक, प्रधानाचार्य व इनके परिवार जनों को समझाते हुए, इन बच्चों को गाँव से दूर दिल्ली अकेले पढ़ने भेजा। यह यात्रा, अपने अगले पड़ाव पर चल दी है। जिस तरह सेवाधाम के प्रधानाचार्य विमल जी भी सेवा धाम से ही शिक्षित हैं। ऐसे कई और विमल जी यहाँ से निकलकर अलग अलग दिशाओं में सेवाधाम, सेवा भारती, संघ व देश का नाम रोशन करेंगे। वह सितारों की तरह चमकेंगे और अपनी ही टोली बनाकर सेवाधाम को चलाने में सहयोग करेंगे। ❐

भगवान बिरसा मुंडा भवन का लोकार्पण

गत 31 अगस्त को नई दिल्ली के पुष्प विहार में नवनिर्मित 'भगवान बिरसा मुंडा भवन : जनजाति शोध एवं प्रशिक्षण केंद्र' का लोकार्पण हुआ। इसका निर्माण वनवासी कल्याण आश्रम ने महान जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी भगवान बिरसा मुंडा की स्मृति में किया है। इस अवसर पर मुख्य वक्ता और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले जी ने कहा कि भारत की राष्ट्रीय पहचान के निर्माण में जनजातीय धरोहर का महत्व अत्यधिक है। अपने आरंभ से ही वनवासी कल्याण आश्रम ने सक्षम, स्वाभिमानी और आत्मनिर्भर जनजातीय समाज बनाने का संकल्प लिया है। उन्होंने आश्रम और उसके

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले

कार्यकर्ताओं के प्रयासों की सराहना की, जो जनजातीय अस्मिता और अस्तित्व की रक्षा तथा उनके सर्वांगीण विकास हेतु निरंतर समर्पित हैं। जनजातीय क्षेत्रों में विकास कार्य ऐसे होने चाहिए जो समाज को सशक्त बनाएँ, न कि उन्हें विस्थापित करें। जनजातीय समाज को संग्रहालय की वस्तु नहीं, बल्कि जीवंत संस्कृति के रूप में देखा जाना चाहिए। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि भगवान बिरसा मुंडा भवन के माध्यम से यह कार्य और अधिक प्रभावी रूप से आगे बढ़ेगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के अध्यक्ष श्री सत्येन्द्र सिंह जी ने की। उन्होंने कहा कि भारत के जनजातीय समाज ने आदिकाल से ही प्रकृति का संरक्षण और संवर्धन अपने जीवनख्रमूल्यों और आस्था से किया है। कल्याण आश्रम निरंतर जनजातीय अस्मिता और अस्तित्व की रक्षा तथा उनके सर्वांगीण विकास हेतु कार्य करता रहा है। मुख्य अतिथि भारत सरकार के शहरी विकास एवं ऊर्जा मंत्री श्री मनोहर लाल जी ने सरकार की ओर से जनजातीय समाज के लिए अधोसंरचना और कल्याणकारी योजनाओं की प्रतिबद्धता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि यह भवन अनुसंधान, प्रशिक्षण और नेतृत्व विकास का केंद्र बनेगा तथा समावेशी विकास का मार्ग प्रशस्त करेगा।

विशिष्ट अतिथि और केंद्रीय जनजातीय कार्य राज्यमंत्री दुर्गादास उइके जी ने कहा कि भारतीय सभ्यता में जनजातीय समाज का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि भगवान बिरसा मुंडा भवन जनजातीय जीवन

कार्यक्रम में उपस्थित आम जन

और संस्कृति को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। केंद्रीय अल्पसंख्यक कार्य एवं संसदीय कार्य मंत्री श्री किरेन रिजिजू जी ने कहा कि भारत के पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक के जनजातीय समाज देश की मुख्यधारा का अभिन्न अंग है। प्राचीन काल से लेकर आज तक जनजातीय समाज ने भारत की सीमाओं की रक्षा की है। वनवासी कल्याण आश्रम ही वह संस्था है, जिसने जनजातीय समाज के साथ हृदय से जुड़ाव स्थापित किया है ख्र न कि दाता की तरह, बल्कि अपने ही भाई-बंधुओं की तरह।

पूज्य महामंडलेश्वर स्वामी यतीन्द्रानंद गिरि जी महाराज (जीवन दीप आश्रम, रुड़की) ने इस पहल को जनजातीय समाज और पूरे राष्ट्र के लिए आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बताया। स्वामी जी ने कहा कि प्रकृति की कीमत पर होने वाला विकास वास्तव में विकास नहीं, बल्कि विनाश है। जनजातीय समाज को उनके क्षेत्रों में होने वाले विकास कार्यों में अपनी बात कहने का अवसर मिलना चाहिए। साथ ही कल्याण आश्रम के कार्यों को दिव्य और पुण्य सेवा बताया। आयोजकों की ओर से बताया गया कि यह भवन जनजातीय अनुसंधान, युवा नेतृत्व प्रशिक्षण तथा जन जागरण कार्यक्रमों का केंद्र बनेगा, जिसका उद्देश्य जनजातीय ज्ञान परंपराओं को संरक्षित करना है। यह पहल विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि देश भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती (2024ख्र2025) मना रहा है। कार्यक्रम का समापन सामूहिक संकल्प के साथ हुआ कि भगवान बिरसा मुंडा के आदर्शों से प्रेरित होकर भारत के जनजातीय समाज के सर्वांगीण विकास के कार्य को और अधिक गति प्रदान की जाएगी। ❐

अपना भोजनालय में मात्र 10 रुपये में भोजन

सेवा भारती जम्मू-कश्मीर द्वारा संचालित "अपना भोजनालय" ने जम्मू के गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज, बख्शी नगर में सेवा के दो वर्ष पूरे कर लिए हैं। इस अवसर पर शाम के भोजन सत्र का शुभारंभ जीएमसी जम्मू के प्रधानाचार्य डॉ. आशुतोष जी, राष्ट्रीय सेवा भारती के संगठन मंत्री श्री सुधीर कुमार जी, अखिल भारतीय छात्रावास प्रमुख श्री जयदेव जी दादा और भोजनालय प्रभारी श्री सुशील कपूर जी द्वारा किया गया।

भोजनालय में प्रतिदिन लगभग 350 से 375 लोगों को मात्र 10 रुपये में पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया जाता है। भोजन में दाल, चावल, रोटी और अचार शामिल रहते हैं। अब तक 2,65,000 से अधिक लोग इस सेवा का लाभ ले चुके हैं। यह सुविधा मुख्य रूप से मरीजों के तीमारदारों और सुपर स्पेशियलिटी व अस्थि अस्पताल में आने वाले मरीजों के लिए उपलब्ध है।

आपदा या आपातकालीन परिस्थितियों में मेडिकल कॉलेज के आपदा वार्ड में भती मरीजों और उनके परिजनों को निःशुल्क भोजन और आवश्यक सामग्री भी वितरित की जाती है।

"अपना भोजनालय" ने गरीब और जरूरतमंद परिवारों के लिए एक मजबूत सहयोग प्रणाली के रूप में स्थान बनाया है। यह पहल न केवल भूखों को भोजन उपलब्ध कराती है, बल्कि समाज में सेवा, संवेदनशीलता और सहयोग की एक प्रेरक मिसाल प्रस्तुत कर रही है। ❐

टीन्स फॉर सेवा और किलकारी का एक साल

पिछले साल जुलाई में हम 'टीन्स फॉर सेवा प्रोजेक्ट' के तहत सेवा भारती से जुड़े थे। शुरुआत में बस इतना पता था कि बच्चों को पढ़ाना है ऑनलाइन, रोज एक घंटा। लेकिन क्या पढ़ाना है, कैसे पढ़ाएंगे, कैसा रिश्ता बनेगा, कुछ नहीं पता था। धीरे-धीरे सब समझ आता गया।

क्लास शुरू होते ही जो पहली चीज महसूस हुई वो थी बच्चों का अपनापन। उन्होंने हमें ऐसे अपनाया किया जैसे हमें पहले से परिचित हों। कोई सवाल नहीं, कोई हिचक नहीं- बस खुला सा मन और ढेर सारी मासूमियत। हम पढ़ाने आए थे, लेकिन वो क्लासेस सिर्फ किताबों की बातें नहीं रहीं। बहुत कुछ और होने लगा जैसे कि बातें, खेल, कहानियां और बहुत सारी पढ़ाई।

हमारी किलकारी टीम भी दो विभागों में बंटी हुई थी- एक ग्रुप जो रोज क्लास लेता था और बच्चों को पढ़ाता था और दूसरा रिसर्च कमेटी, जो बच्चों के सिलेबस के हिसाब से विषय तैयार करती थी, वर्कशीट्स बनाती थी और उनके लिए एक्टिविटीज प्लान करती थी। दोनों टीमों ने मिलकर पूरे साल कई जरूरी विषय कराए, सिलेबस से जुड़ी पढ़ाई करवाई और समय-समय पर टेस्ट लेकर बच्चों की समझ को भी परखा।

साल में कई बार सेंटर गए और हर बार कुछ नया मिला। पहली बार 15 अगस्त को बच्चों से आमने-सामने मिले थे और वो पहली मुलाकात अब एक प्यारी याद बन गयी। फिर दिवाली पर जब हम पहुंचे तो बच्चों ने अपने हाथों से बनाए कार्ड्स और गिफ्ट्स दिए। वो पल बहुत अच्छा लगा। इतने छोटे बच्चों का इतने प्यार से कुछ देना वो एहसास आज भी बहुत खास है।

एसआरसीसी वाला दिन बहुत अलग था। बच्चों को स्टेज पर ले जाना उनके साथ एक प्रापर कॉलेज में जाना और डांस प्रतियोगिता में भाग लेना, हम सब के लिए बड़ा दिन था। लेकिन सबसे अच्छा ये लगा कि बच्चों ने वहां जिस तरह खुद को पेश किया वो देखकर दिल से गर्व हुआ। वहां मौजूद हर किसी ने उनकी तारीफ की और हम जो उन्हें सिर्फ पढ़ा रहे थे उस दिन कुछ ज्यादा महसूस करने लगे - जैसे उनका हर छोटा कदम हमारी जीत हो।

हाल ही में हम फिर सेन्टर गए थे किसी त्योहार पर नहीं, बस मिलने। बच्चों ने हमें छोटे-छोटे नोट्स दिए जिसमें लिखा था कि हम उनके लिए क्या मायने रखते हैं। सूरज ने लिखा - 'सभी दीदी-भैया बहुत अच्छा पढ़ाते हैं।' और भी बच्चों ने अपने-अपने पसंदीदा दीदी-भैया के लिए कुछ प्यारे-प्यारे शब्द लिखे।

हमने इस एक साल में बच्चों को बदलते देखा है, जो पहले चुप रहते थे वो अब सवाल पूछते हैं, जवाब देते हैं और मुस्कराते हैं। उनके अंदर जो बदलाव आया है वो हमें हैरान करता है, लेकिन इससे भी ज्यादा जो बात हमें रोज कुछ नया सिखाती है जो है- उनका संस्कार।

हम टीचर बनकर आए थे, लेकिन कई बाद लगता है, असली सिखाने वाले वही हैं।

और इस पूरे सफर में एक और चीज रही जिसने सब कुछ आसान और खूबसूरत बनाया -सेवा भारती टीम। नीतू मैम, पंकज सर, सीमा मैम, और पूजा मैम- जितने अच्छे गाइड हैं, उतने ही समझदार और सराहना करने वाले हैं। उन्होंने कभी हमें सिर्फ वॉलंटियर्स की तरह नहीं देखा, बल्कि हर बार हमारी बात सुनी, हमारी मेहनत को समझा और हर मोड़ पर साथ खड़े रहे। उनके बिना शायद हम इतना कुछ इतने दिल से नहीं कर पाते।

एक बार पूछा था- तुम्हारी जिंदगी की सबसे अच्छी याद क्या है? कई बच्चों ने कहा कि वो दिन जब आप हमसे मिलने आए थे। पता नहीं हमने क्या किया ऐसा, पर इतना जान गए हैं कि ये रिश्ता एक साल की क्लास से कहीं बड़ी है।

अब जब हम पीछे देखते हैं, तो लगता है कि यह सिर्फ एक वॉलंटियरिंग प्रोजेक्ट नहीं है- यह हमारे कॉलेज जीवन का सबसे सच्चा और दिल से जुड़ा हुआ हिस्सा है। इन बच्चों ने हमें सिर्फ पढ़ाना नहीं, महसूस करना भी सिखाया।

द्वारा-किलकारी टीम (सीडीएफ, दयाल सिंह कॉलेज) ❐

'रन फॉर गर्ल चाइल्ड' मैराथन का प्रमाणपत्र वितरण

गत 3 अगस्त को 'रन फॉर गर्ल चाइल्ड' मैराथन का प्रमाणपत्र वितरण समारोह शाम 4:30 बजे सेवा भारती दिल्ली प्रांत कार्यालय में आयोजित किया गया। इसमें जाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज, श्यामा प्रसाद मुखर्जी कॉलेज तथा जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज सहित विभिन्न महाविद्यालयों के प्राध्यापकों और छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रमाणपत्र का वितरण सेवा भारती के महामंत्री श्री सुशील गुप्ता एवं सुश्री निधि आहूजा (सचिव) द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री मनोरंजन गोस्वामी (वालंटियर मैनेजमेंट हेड) ने किया। समारोह का समापन सेवा भारती के अधिकारियों और उपस्थित प्रतिभागियों के बीच एक संवादात्मक फीडबैक सत्र के साथ हुआ। विचारों और अनुभवों के आदान-प्रदान ने इस सत्र को अत्यंत फलदायी और रचनात्मक बना दिया। समग्र रूप से यह आयोजन न केवल प्रतिभागियों के योगदान को मान्यता देने का अवसर था, बल्कि उन्हें सेवा भारती के श्रेष्ठ उद्देश्यों और ध्येय को और गहराई से समझने का अवसर भी प्रदान करता है। इस अवसर पर सभी ने सेवा और सहयोग की भावना को साझा किया और समाजोपयोगी पहलों में अपनी भागीदारी पर गर्व अनुभव किया।

टीएफएस अगस्त मास की कुछ झलकियां

अगस्त महीने में स्वतंत्रता दिवस और जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में टी एफ एस के वॉलिंटियर्स गांधीनगर जिले की स्मार्ट क्लास में बच्चों से मिलने गए। वॉलिंटियर्स ने सेवित जनों से देशभक्ति की कविता सुनी और उनको मटकी सजाना भी सिखाया। इस अवसर पर वॉलिंटियर्स ने सेवित जनों को उपहार भी दिए। ये दयाल सिंह कॉलेज के वॉलिंटियर्स हैं जो पिछले 1 साल से लगातार स्मार्ट क्लास के बच्चों को ऑनलाइन क्लास देते हैं।

गोपालधाम के बच्चों ने की गणेश वंदना

गत 28 अगस्त को केशवपुरम विभाग के गोपालधाम छात्रावास के बच्चों द्वारा सरस्वती विहार जिले के आनन्दवास नगर में 'मैत्री गणपति समारोह समिति' द्वारा आयोजित गणपति महोत्सव के रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम में 'गणेश वंदना' पर प्रस्तुति दी गई। इस प्रस्तुति की सभी ने सराहना की। इससे बच्चों का उत्साह बढ़ा। आयोजन में मुख्य आकर्षण दिल्ली की माननीय मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी तथा क्षेत्रीय विधायक का रहा। कार्यक्रम हेतु बच्चों को प्रशिक्षित करने में बहन रेखा जी का बड़ा योगदान रहा। विभाग के सहमंत्री श्रीमान मनोज जी द्वारा 'बीकानेरवाला' रेस्टोरेंट में बच्चों को भोजन करवाया गया। रेस्टोरेंट में बच्चों को और सेवा भारती के बैनर को देख कर नए दानदाता परिवारों ने सेवा भारती की जानकारी ली और कई परिवारों ने गोपालधाम से जुड़ने का वचन दिया। कुछ परिवारों ने सहयोग राशि भी दी।

महावीर नगर में स्वतंत्रता दिवस

गत 13 अगस्त को सेवा भारती केशव पुरम विभाग द्वारा स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी का पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ आर्य समाज मंदिर, महावीर नगर में मनाया गया। सेवा भारती तिलक नगर के बाल संस्कार केंद्र, ट्यूशन केंद्र एवं कंप्यूटर में पढ़ने वाले बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम की संयोजिका श्रीमती सुजाता नांगिया जी, निरीक्षिका श्रीमती सरला चौधरी जी, अध्यापिकाएं श्रीमती निशा सभरवाल जी, मंजू जी, शिवानी जी एवं कनिका जी, मनमीत सिंह जी ने सभी ने मिलकर बच्चों को विशेष अभ्यास करवाया और सभी बच्चों ने बहुत सुंदर कार्यक्रम प्रस्तुत किए। सबसे पहले मुख्य अतिथि श्री भारत भूषण चंदेलिया जी (प्रधान पंचायत समिति 80 गज तिलक नगर), मुख्य वक्ता श्री अतुल अरोड़ा जी (नगर कार्यवाह तिलक नगर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) एवं सह विभाग मंत्री श्री मनोज जी ने दीप प्रज्वलन किया एवं तिरंगा झंडा फहराया, तत्पश्चात राष्ट्रगान हुआ। कार्यक्रम में विशेष आमंत्रित सदस्य श्री यशपाल आर्य जी, प्रधान आर्य समाज, श्री संजय गुप्ता जी (महावीर मंदिर), नरेंद्र आर्य (जिला अध्यक्ष), संजय नांगिया जी (जिला कोषाध्यक्ष), श्री मलिक जी (पंजाब केसरी वरिष्ठ नागरिक क्लब) उपस्थित रहे। मुख्य वक्ता श्री अतुल अरोड़ा जी ने अपने देश के प्रति प्रेम करना, देश की आजादी कैसे मिली बहुत कम समय में अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम को सुंदर बनाने के लिए तिलक नगर सेवा भारती अध्यक्ष श्री अनिल रहेजा जी, मंत्री श्री युवराज शर्मा जी, उपाध्यक्ष श्री प्रवीण गेरा जी, कोषाध्यक्ष श्री महेंद्र अरोड़ा जी की प्रशंसा की। ❐

स्वतंत्रता दिवस पर विशेष कार्यक्रम

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर स्व. सुरेश चन्द्र गोयल छात्रावास (चन्द्र नगर-सेवा भारती दिल्ली द्वारा संचालित) के छात्र स्वतंत्रता दिवस मनाने के लिए सेवाधाम विद्यामन्दिर गये। यहां छात्रों को बहुत अच्छा लगा।

छात्र परिचय सम्मेलन

गत दिनों पूर्वी विभाग में सेवा भारती द्वारा संचालित केन्द्र से शिक्षा ग्रहण कर चुके छात्र आपस में मिले और एक-दूसरे का हालचाल पूछा। इस कार्यक्रम से इन छात्रों में एक नई ऊर्जा पैदा हुई।

सरस्वती विहार में स्वतंत्रता दिवस

गत 15 अगस्त को केशव पुरम विभाग के सरस्वती विहार जिले में स्वतंत्रता दिवस एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का कार्यक्रम मनाया गया। कार्यक्रम पीतमपुरा नगर स्थित जीण्पीण ब्लॉक सेवा भारती केंद्र के प्रांगण एवं साथ में जुड़े वरिष्ठ नागरिक मंच में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिले के माननीय अध्यक्ष श्रीमान प्रमोद अग्रवाल ने की। मुख्य अतिथि दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व चेयरमैन एवं प्रसिद्ध समाजसेवी श्री मोहिंदर पाल सिंह चड्ढा जी रहे। इनके अतिरिक्त पीतमपुरा रथ वाला मंदिर समिति से श्री विनोद जी एवं पीतमपुरा वरिष्ठ नागरिक मंच से श्रीमान धर्मवीर गुप्ता जी ने मंच साझा किया। विभाग से विभाग मंत्री श्रीमान रामसेवक जी, दोनों सहमंत्री श्रीमान मनोज जी, श्रीमती दीप्ति अग्रवाल जी का भी सहयोग मिला। दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत की गई। तत्पश्चात् ध्वजारोहण मुख्य अतिथि श्रीमान मोहिंदर पाल सिंह चड्ढा जी, रथ वाला मंदिर से श्री प्रमोद जी, वरिष्ठ नागरिक मंच से श्री धर्मवीर जी सहित विभाग मंत्री रामसेवक जी, माननीय जिला अध्यक्षा आशा जी, माननीय अध्यक्ष प्रमोद जी, पीतमपुरा नगर के माननीय अध्यक्ष श्रीमान इंद्रपाल अरोड़ा जी द्वारा किया गया। शिक्षिका बहन गीता जी ने राष्ट्रगान किया। विभाग, जिले तथा नगर के कार्यकर्ताओं द्वारा गणमान्य अतिथियों का तिरंगा पटका पहनाकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम में शिक्षिका बहनों एवं बच्चों ओर बच्चियों द्वारा देशभक्ति व जन्माष्टमी पर भाषण, गीत, कविता नाटक, नृत्य की बहुत अच्छी प्रस्तुति गई। कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी बच्चों को पुरस्कार स्वरूप छतरी बॉटी गई। शिक्षिकाओं के मान के लिए सभी शिक्षिकाओं को भी पुरस्कार दिया गया। वरिष्ठ कार्यकर्ता श्रीमान ब्रजमोहन मित्तल जी द्वारा दिल्ली सेवा भारती के द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों का स्मरण करवाया गया। मोहिंदर पाल सिंह चड्ढा जी द्वारा सेवा भारती के द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों की सराहना और प्रशंसा करते हुए सेवा भारती को भारत की आत्मा कहा।

धन्यवाद ज्ञापन विभाग मंत्री श्रीमान रामसेवक जी द्वारा दिया गया और कार्यक्रम का समापन किया। कार्यक्रम पश्चात अल्पाहार की व्यवस्था रही। कार्यक्रम में 140 की संख्या रही। जिले से जिला कार्यकारिणी, पीतमपुरा नगर टोली, हैदरपुर नगर, शालीमार बाग नगर अध्यक्ष, निरीक्षिका बहन, सभी शिक्षिकाएं, सेविकाएं, एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। ❐

– अनुज कुमार, जिला मंत्री (सरस्वती विहार)

दिलशाद गार्डन में झंडारोहण

गत 13 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सेवा भारती, स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रकल्प, कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन में झंडारोहण एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का उत्साहपूर्वक आयोजन हुआ। झंडारोहण डॉ अरविंद गुप्ता जी (संस्थापक भारत माता मंदिर, दिलशाद गार्डन, प्रसिद्ध दवा निर्माता) के द्वारा किया गया। विशिष्ट अतिथियों के रूप में सेवा भारती यमुना विहार विभाग के अध्यक्ष, संगठन मंत्री नंद नगरी जिला श्रीमान राज नारायण जी का भी आगमन हुआ। कार्यक्रम में प्रकल्प कार्यकारिणी के सभी सदस्य भी सम्मिलित हुए। झंडारोहण के उपरांत दीप प्रज्वलन एवं माँ सरस्वती के वंदना से सांस्कृतिक कार्यक्रमों की विधिवत शुरुआत हुई। उसके बाद केंद्र में पढ़ने वाली बालिकाओं के द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रप्रस्तुत किए गए। तत्पश्चात कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अरविंद गुप्ता जी के द्वारा बच्चों का मार्गदर्शन हुआ। कार्यकम में बच्चो के उत्साह को देखकर और उनका मनोबल बढ़ाने के लिए उपस्थित सभी बालक बालिकाओं को एक एक चॉकलेट भी वितरित किया। तत्पश्चात वन्देमातरम गीत के साथ झण्डा अवरोहण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सेवाधाम विद्या मंदिर के समाचार

मना स्वतंत्रता दिवस

79 वां स्वतंत्रता दिवस का कार्यक्रम बड़े हर्षोल्लास के साथ सेवा भारती सेवाधाम विद्या मंदिर आवासीय विद्यालय में मनाया गया। पास की बस्तियों में छात्रों एवं शिक्षकों द्वारा सफलतापूर्वक तिरंगा यात्रा निकाली गई। छात्रों द्वारा प्रस्तुत मंचीय कार्यक्रमों ने आगन्तुक अतिथियों का मन मोह लिया।

पांच प्रतियोगिताएं

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2025 के द्वारा सेवा भारती सेवाधाम विद्या मंदिर आवासीय विद्यालय में पांच प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। प्रतियोगिताएं इस प्रकार हैं- गायन प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, कविता प्रतियोगिता और निबंध प्रतियोगिता। इन सभी प्रतियोगिताओं में विद्यालय की कक्षा 6वीं से 12वीं तक के सभी छात्रों ने भाग लिया।

जैसा मैंने सेवाधाम में देखा

सेवा भारती के दिल्ली-एनसीआर में स्थित विद्यालय में 'भगवद्गीता' पर पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से कुछ कहने का अवसर मिला। इसका माध्यम बनी डॉ निधि रस्तोगी, जो एक लाइफ कोच हैं और जिनके पास संयोग से मेरी पुस्तक, 'संपूर्ण भगवद्गीता दोहों में' पहुंच गई। पुस्तक पढ़ने के बाद उन्होंने मुझसे संपर्क किया और इस विद्यालय के विद्यार्थियों के समक्ष गीता पर एक व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया।

सेवा भारती के इस प्रकल्प में देश भर से ऐसे विद्यार्थी चुनकर आते हैं, जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं तथा पढ़ने में अच्छे हैं। छठी कक्षा से 12वीं कक्षा तक इन विद्यार्थियों की यहां मुफ्त शिक्षा, हॉस्टल और खान-पान की व्यवस्था रहती है। इस समय विद्यालय में 18 राज्यों से कुल 360 विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इस संस्था से निकले हुए बहुत से विद्यार्थी आज देश में विभिन्न पदों पर काम कर रहे हैं। संस्था के प्रधानाध्यापक श्री विमल जी भी इसी स्कूल के छात्र रहे हैं। 30 से भी अधिक साल पुरानी यह संस्था पूरी तरह से दान पर आधारित है। स्कूल का पूरा वातावरण जैसे संस्कारों की एक निरंतर पाठशाला है। मेरे पूरे 1 घंटे के व्याख्यान के दौरान एक भी बार किसी अध्यापक को यह कहने की आवश्यकता नहीं पड़ी कि शांति बनाए रखें। यही स्थिति भोजन कक्ष की थी, जहां हमने स्कूल के छात्रों के साथ बैठकर दोपहर का भोजन किया। ये सभी छात्र पूरी तरह से स्वयंसेवक हैं जो साफ सफाई, बर्तनों की धुलाई, भोजन का वितरण सभी कुछ बहुत ही सेवाभाव से और श्रद्धा से करते हैं। कुल मिलाकर एक बहुत सुखद और प्रेरणादायक अनुभव रहा। धन्यवाद डॉक्टर निधि, धन्यवाद सेवा भारती।

खेलों में आगे

सेवा भारती सेवाधाम विद्या मंदिर के छात्रों ने समर्थ शिक्षा समिति दिल्ली (विद्या भारती) द्वारा आयोजित फुटबॉल, टेबल-टेनिस, बैडमिंटन, एवं बास्केटबॉल में सब-जूनियर (यू-14) जूनियर (यू-17), सीनियर (यू-19) खेलों में दिल्ली प्रांतीय स्तर पर स्वर्ण पदक जीत कर विद्या भारती (उत्तर क्षेत्र) के लिए क्वालीफाई किया। ❐

— यशपाल सिंह 'यश'

स्वतंत्रता दिवस एवं जन्माष्टमी

गत 14 अगस्त को यमुना विहार विभाग में जिला रोहतास नगर में माधव सेवा केंद्र सुदामापुरी में 15 अगस्त (स्वतंत्रता दिवस) एवं श्रीकृष्ण जनमाष्टमी का त्योहार धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई। दीप प्रज्वलन विभाग मंत्री श्रीमान गवेंद्र सिंह जी एवं विभाग महिला कार्य प्रमुख श्रीमती वीणा महतो जी द्वारा किया गया। राष्ट्रीय ध्वजारोहण विभाग मंत्री श्रीमान गवेंद्र सिंह जी और मुख्य अतिथि श्रीमती अनिता जैन ने किया। इस कार्यक्रम में जिला रोहतास नगर की वेलकम बस्ती, पूर्वी जनता कॉलोनी, वाल्मीकि बस्ती सुदामपुरी एवं छज्जूपुर बस्ती के बच्चों ने तथा बालवाड़ी के नन्हें-मुन्ने बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए और राष्ट्रभक्ति के गीतों का जोशपूर्ण प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम में बच्चों के अभिभावकगणों और गणमान्य लोगों ने आनन्द उठाया और

प्रतियोगियों का उत्साहवर्धन किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी प्रतियोगियों को पुरस्कार देकर उनका उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीमती अनिता जैन दीदी ने और विभाग मंत्री श्रीमान गवेंद्र सिंह ने अपने संबोधन में स्वतंत्रता दिवस एवं श्रीकृष्ण जनमाष्टमी के विषय में बच्चों को बताया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ, तत्पश्चात अल्पाहार की व्यवस्था की गई। ❐

स्वतंत्रता दिवस पर स्वच्छता की बात

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में सेवा भारती केशव पुरम विभाग एवं भारती कॉलेज के द्वारा पीली कोठी, हरि नगर की एक बस्ती में वहां के स्थानीय निवासियों के साथ मिलकर स्वच्छता के विषयों पर बातचीत की गई। बस्ती की समस्याओं तथा परिस्थितियों को समझने के लिए घर-घर जा कर सर्वेक्षण किया गया। भारती कॉलेज की प्रधानाचार्या, प्रोफेसर तथा सेवा भारती के कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर सभी ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर बच्चों को मिष्ठान वितरण किया।

स्वतंत्रता दिवस पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम

गत 15 अगस्त को यमुना विहार विभाग में जिला रोहतास नगर जिला में मानसरोवर पार्क नगर की लालबाग सेवा बस्ती की किशोरी विकास की बालिकाओं ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं देशभक्ति के गीतों का आनंदमयी ढंग से प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का आरंभ सेवा बस्ती की बहन द्वारा दीप प्रज्वलित कर कर किया। इस कार्यक्रम में विभाग संगठन मंत्री श्रीमान मानवेंद्र जी, जिला रोहतास नगर अध्यक्ष श्रीमान रामप्रकाश जी, जिला मंत्री श्रीमान राजेंद्र जी एवं जिला निरीक्षका बहन पुष्पा जी उपस्थित रहीं। कार्यक्रम में जिला अध्यक्ष एवं जिला मंत्री ने स्वतंत्रता दिवस एवं कृष्णजनमाष्टमी के विषय में बच्चों का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम का संचालन एवं प्रस्तुतीकरण सेवा बस्ती के कार्यकर्ताओं ने किया। कार्यक्रम का समापन वंदेमातरम राष्ट्रगीत के साथ हुआ। ❒

कलंदर कॉलोनी में रक्षाबंधन

कलंदर कॉलोनी स्थित सेवा भारती के केशव सेवा केंद्र, स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट में 8 अगस्त 2025 को रक्षाबंधन उत्सव मनाया गया। कार्यक्रम में केंद्र में शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्र-छात्राओं, शिक्षक, शिक्षिकाओं तथा कार्यकारीणी के सदस्यों ने सहर्ष भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दोपहर 01ण्30 बजे से हुआ। इसमें केंद्र की शिक्षिकाओं ने उपस्तिथ कार्यकारिण ी के सदस्यों को रक्षासूत्र बांधकर कार्यक्रम की शुरुआत की। कार्यक्रम में लगभग 60 लोगों की उपस्थिति रही। श्री राज नारायण जी, संगठन मंत्री, नंद नगरी जिला का रक्षाबंधन का ऐतिहासिक महत्व इस विषय पर संबोधन भी हुआ। उसके बाद केंद्र में पढ़ने वाली बालिकाओं ने बालकों को रक्षा सूत्र बाँधा। तदोपरान्त उपस्तिथ सभी लोगों को घेवर की मिठाई, पूरी सब्जी बांटी गई। प्रकल्प द्वारा संचालित सपेरा बस्ती सेवा केंद्र में भी रक्षाबंधन का कार्यक्रम बच्चों के साथ मनाया गया। इस प्रकार हर्षोल्लास के साथ रक्षाबंधन का यह पावन पर्व मनाया गया। ❒

सेवाधाम विद्यालय में रक्षाबंधन

सेवाधाम विद्यालय में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी पुरातन छात्र परिषद द्वारा रक्षाबंधन का कार्यक्रम बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम में 60 पुरातन छात्र, 30 बहनें एवं माता जीवनीबाई कन्या छात्रावास की बालिकाएं व शिक्षिकाएं भी सम्मिलित हुई। सभी बहनों ने सभी भाइयों को राखी बांधकर इस कार्यक्रम को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया एवं छात्रों द्वारा कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्रस्तुत कर सभी को आनंदित एवं प्रफुल्लित किया।

रविदासपुरी में रक्षाबंधन

मुखर्जी नगर जिले में स्थित बालासाहब देवरस केंद्र ई ब्लॉक, रविदासपुरी में रक्षाबन्धन पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। वाचनालय की बालिकाओं व शिक्षिकाओं ने जिले के अध्यक्ष श्री वीरेंद्र जी व सुरेश जी और अन्य वरिष्ठ कार्यकर्ताओं को रक्षासूत्र बांधे, सभी ने मिठाई खाई। इसके साथ ही सब ने एकख्रदूसरे की रक्षा का संकल्प लेकर कार्यक्रम की समाप्ति की। ❒

सुदामापुरी में रक्षाबंधन

गत 8 अगस्त को यमुना विहार विभाग के जिला रोहतास नगर में माधव सेवा केंद्र सुदामापुरी में रक्षाबंधन का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें जिले की सभी शिक्षिकाओं और निरीक्षिकाओं ने भाइयों को रक्षासूत्र बांधे, और मिठाई खिलाई। सभी बहिनों ने भाइयों के लिए मंगल की कामना की, और सभी भाइयों ने बहिनों की रक्षा और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। इस कार्यक्रम में बालवाड़ी के बच्चों ने भी एक-दूसरे को रक्षासूत्र बांधकर रक्षाबंधन का त्योहार धूमधाम से मनाया। इस कार्यक्रम में विभाग मंत्री श्रीमान गवेंद्र सिंह जी, विभाग महिला कार्य प्रमुख श्रीमती वीणा महतो जी, जिला रोहतास नगर अध्यक्ष श्रीमान रामप्रकाश जी, जिला रोहतास नगर महिला समिति मंत्री श्रीमती ललिता जी ने सहभागिता करते हुए कार्यक्रम का आनन्द उठाया।

हैदरपुर में रक्षाबंधन

गत 8 अगस्त को केशव बाल निकेतन हैदरपुर केन्द्र, जिला सरस्वती विहार, विभाग केशव पुरम में रक्षा बंधन का त्योहार मनाया गया। इसमें बच्चों ने शिक्षिकाओं के सहयोग से राखियां बनाई और अपनी स्वनिर्मित राखियां ही अपने भाइयों को बांधीं। बहनों ने पहले तिलक लगाया और मिठाई खिलाई और राखी बांधी। भाइयों ने भी बहनों को उपहार स्वरूप चॉकलेट, कॉपी, पेंसिल आदि दिया। बच्चों को कहानी के माध्यम से इस त्योहार का महत्व समझाया गया कि किस प्रकार मेवाड़ की महारानी कर्मावती ने राखी के पवित्र बंधन से अपने राज्य की रक्षा की थी। इस त्योहार से हमें भाई-बहन के प्रेम, सुरक्षा और जिम्मेदारी की शिक्षा मिलती है। ❒

पूर्वी विभाग में तीज

पूर्वी विभाग के प्रत्येक जिले में हर्षोल्लास और उल्लास पूर्वक तीज उत्सव मनाया गया। शाहदरा जिले में तीज का त्योहार बहुत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बुक बैंक अध्यक्ष श्रीमती रेणु जैन जी द्वारा की गई। जिला अध्यक्ष शुकदेव भारद्वाज जी ने बहनों को तीज का महत्व समझाया। भजन मंडलियों व शिक्षिकाओं द्वारा गीत संगीत का कार्यक्रम रहा। रेनू जैन जी ने सभी को खेल खिलाएं और जीतने वालों को पुरस्कृत किया। जिले में सभी पुरस्कार बुक बैंक अध्यक्ष रेनू जैन जी द्वारा दिए गए। संपूर्ण जिला कार्यकारिणी के साथ विभाग अध्यक्ष श्री विनोद बंसल, विभाग से सहमंत्री व जिला पालक श्री शांतिलाल डागा और विभाग कोषाध्यक्ष श्री सुरेश भी उपस्थित रहे। अंत में जलपान की व्यवस्था रही। शाहदरा जिला में विभाग अध्यक्ष श्री विनोद बंसल जी द्वारा ४ दरियां दी गई। शाहदरा जिला विभाग अध्यक्ष जी का हार्दिक धन्यवाद करता है। ❐

हनुमान सेवा केंद्र में हरितालिका तीज

दक्षिणी विभाग में बदरपुर जिले के हनुमान सेवा केंद्र,बिलासपुर कैंप में हरितालिका तीज का कार्यक्रम सानंद मनाया गया। इसमें बस्ती की बहनों ने अति उत्साह के साथ भाग लिया। उन्हें इस त्योहार के बारे में बताया गया।

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

गाँधी नगर जिला के समाचार

रक्षाबंधन के पावन अवसर पर सेवा भारती, जिला गाँधी नगर के सभी केन्द्रों में कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस पर्व के अंतर्गत बहनों ने दिल्ली पुलिस के जवानों, स्वच्छता सेवकों एवं सेवा भारती के कार्यकर्ताओं को स्नेहपूर्वक राखी बाँधकर उनके प्रति कृतज्ञता एवं भाईचारे का भाव प्रकट किया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी सेवित जन, शिक्षार्थी एवं कार्यकर्ताओं ने हर्ष और उल्लास के साथ रक्षाबंधन का उत्सव मनाया। यह आयोजन न केवल पारंपरिक संस्कृति के संरक्षण का प्रतीक रहा, बल्कि समाज में आपसी सौहार्द और सम्मान की भावना को भी सशक्त किया।

शाहदरा जिले के सभी केंद्रों पर रक्षाबंधन का त्योहार हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। अंबेडकर केंद्र कड़कड़डूमा में विभाग अध्यक्ष श्रीमान विनोद बंसल जी, विभाग सह मंत्री और जिले के पालक श्री शांतिलाल जी व महिला समिति मंत्री श्रीमती विनीता गुप्ता जी उपस्थित रहे। भीकम सिंह कॉलोनी में केंद्र पालक नरेश भाई साहब और लव कुश केंद्र में केंद्र पालक श्रीमती मधुर बंसल जी उपस्थित रहे। सभी सेवित जनों ने बस्ती के लोगों को रक्षासूत्र बांधा। आदरणीय विनोद बंसल भाई साहब, शांतिलाल भाई साहब व नरेश भाई साहब ने सेवित जनों व शिक्षिकाओं से रक्षासूत्र बंधवाया।

इन्द्रप्रस्थ जिले के सभी केन्द्रों पर रक्षा बंधन का त्योहार बहुत धूमधाम से मनाया गया। कार्यकर्ता बन्धुओं व बहनों के साथ-साथ शिक्षिका-निरिक्षिका बहनों के सहयोग से मनाया गया।बस्ती में घर घर जाकर भी सम्पर्क किया गया। ❐

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 10-11 सितम्बर, 2025, प्रकाशन तिथि-6-7 सितम्बर, 2025
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नंबर
DL(ND)-11/6188/2025-27

कृष्ण विहार में अभ्यास वर्ग

गत दिनों लवकुश सेवा भारती केंद्र, कृष्ण विहार में शिक्षिका अभ्यास वर्ग आयोजित हुआ। इसमें जिले के सेवा भारती केंद्रों की सभी निरीक्षिका एवं शिक्षिका, किशोरी विकास, महिला समिति की बहनों के साथ जिला एवं नगरों के कार्यकर्ता उपस्थित रहे। वर्ग का आरंभ दैनिक प्रार्थना तथा गायत्री मंत्र से हुआ। वर्ग तीन सत्रों का रहा। प्रथम सत्र में दीपा जी (निरीक्षिका) ने सभी को दैनिक प्रार्थना का अभ्यास कराया। द्वितीय सत्र में श्रीमान मनोरंजन जी (प्रांत वालंटियर इंगेजमेंट प्रमुख) ने केंद्रों पर चलने वाले विभिन्न प्रकल्पों से सेवा भारती की अपेक्षा पर विषय लिया। तृतीय सत्र में श्रीमान निर्भय जी (प्रांत स्वावलंबन प्रमुख) ने सेवा भारती की अवधारणा विषय पर मार्गदर्शन किया। वर्ग की कुल संख्या 36 रही। वर्ग का समापन कल्याण मंत्र से हुआ। बाद में सभी ने सामूहिक भोजन किया। ❒

उज्जैन भ्रमण (महाकालेश्वर दर्शन)

जुलाई माह में झण्डेवाला विभाग, मुखर्जी नगर जिले के कार्यकर्ता उज्जैन गए। सभी कार्यकर्ता, शिक्षिका बहनें 10.00 बजे नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुंचे। अगले दिन सभी लोग उज्जैन पहुंच गए।।वहां पहुंच कर सभी ने स्नान कर, नाश्ता किया। उसके बाद सभी भैया, बहनें मन्दिर दर्शन के लिए चल दिए। मन्दिर दर्शन महाकालेश्वर, ओमकालेश्वर, ममरेश्वर यमदा नदी की आरती के दर्शन किए। अगले दिन महाकालेश्वर जी की भस्म आरती, उनका श्रृंगार के दर्शन किए। उसके बाद संदीपनी ऋषि के आश्रम, काल भैरव, हरसिद्धि, मंगलदोष मंदिर के दर्शन किए। धर्मशाला में बैठकर भजन-कीर्तन हुआ। सभी बहनें बहुत आन्दित थीं। कार्यकर्ताओं में सुरेन्द्र जी, विरेन्द्र जी, महेश जी, सुरेश जी, देवेन्द्र जी थे। संख्या 44 की थी। ❒

केन्द्र के लिए सहयोग

गत 19 अगस्त 2025 को प्रात: शाखा के बाद किसी परिचित के घर मिलने गए। वहां पर माता जी मिलीं। उनको सेवा भारती व विभिन्न प्रकल्पों के विषय में बताया और हाल ही में पूर्वी विभाग में नए छात्रावास तथा अपराजिता के विषय में विस्तृत जानकारी दी। तब माता जी ने कहा कि सामाजिक कार्य में वह कुछ सहयोग करना चाहती हैं। तुरन्त ही रू. 21,000/- का चेक अपने स्वर्गीय पति श्री नगिन चंद गर्ग की स्मृति में भेंट किया। इस सहयोग के लिए सेवा भारती पूर्वी विभाग श्रीमती सुषमा गर्ग जी को आभार व्यक्त करती है।

–शांतिलाल डागा

मुद्रक/संपादक/प्रकाशक: डॉ. शिवाली अग्रवाल द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।